चितवनक शिकार

चितवनक शिकार

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

CHITVANAK SHIKAR (चितवनक शिकार)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-26-2
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2019)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

अगुताइ भेल

दस सालक पछाइत रघुनीबाबाक भाग्य जगलैन जे जीतन बाबा जकाँ एकठाम समटल परिवारसँ भेँट भेलैन। माने, पोता-पोती, बेटा-पुतोहुसँ एक घर-ऑंगनमे भेँट भेलैन। असगरेक दुनू परानीक जे घर-आँगन छेलैन ओ भरल-पुरल बुझि पड़लैन।

दस बजे भिनसुरका उरवड़ाहाक समय, जेठ मासक अन्तिममे रघुनीबाबा फलवारीक सेवामे लागल मने-मन सोचि रहल छला- यएह ओ समय छी जे पाँतरमे पैसल पियासे बटोहीक प्राण लइए, यएह ओ समय छी जइमे पाइनिक तृष्णासँ मालो-जालक आ आनो-आन जीव-जन्तुक जान जाइए। यएह समय ने हमरो आ हमर जिनगियोक जान-प्राण लइत अछि।

फलवारीक हहरैत किछु गाछकेँ देखि रघुनीबाबाक मन मानि गेल छेलैन जे जेठक ताप सन्ताप बनि जरूर अहू सबहक जीवन लेबे करत..! रघुनीबाबाक हृदय सिहैर गेल छेलैन जे एकरे जीवन किए, ओ तँ फलदाता छी, फलित तँ अपन होइए, तँए अपनो जीवन ने लेब भेल। जहिना रस्ता-बाट वा घाट-बाट मरल वा मरनासन्नक जीवनक ओगरवाही करैत ओगरवाह अधमरू जकाँ भऽ जाइए तहिना दारीमक अधमरू गाछक छाहैरमे बैस अपन जीवन रघुनीबाबा देखि रहल छला।

दस बर्खक पोता, पेन्ट-शर्ट पहिरने बाबाक फलवारी देखए आएल। ओना, प्राइवेट शिक्षण संस्थानक विद्यार्थी वोआजी, जेकरा

शिक्षक सिखा देने छेलखिन आकि अपन संस्थानक बेवहारसँ सीख चुकल छल से नइ बुझि रहल छी। मुदा एते तँ भेबे कएल जे वोआजी रघुनीबाबा लग पहुँचल। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, वोआजी, शब्द, अपना सभ बौआजी कहै छिऐ से नहि वोआजी शब्द अछि। आजुक परिवेशमे सभ कथुक नस्ल जहिना बदैल रहल अछि तहिना भाषा-भाषिक सेहो भइये गेल अछि। अंगरेजीक शब्द 'वोआ' आ तइमे 'जी' लागल अछि तँए दोगला नस्ल भेने 'वोआजी' शब्द अछि।

जेठक दसबजिया रौद, दारीमक गाछक अधमरू छाहैरमे बैसल रघुनीबाबा अपन पाँच कट्ठाक मछपोसा पोखैरकेँ सेहो देखि रहल छला। छाती भरि मोट केचलीक संग चिलमिल इत्यादिक सुखल बोन-झाड़ पोखैरमे देखि रहल छला। जहिना खुट्टापर मरल गाए देखि पोसनिहार अपन दूधक आशा तोड़ि लइ छैथ, तहिना रघुनी बाबाकेँ सेहो टुटि रहल छैन।

पैछला शताब्दीक जे सातम-आठम दशकक बीचक समय, जे किसानक जागरणकाल छल। ओही समय रघुनीबाबा कौलेजक पढ़ाइ समाप्त करैत किसानी जिनगी जीबैक संकल्प लेलैन। जहिना दुनियाँक सभ कथुक गति-विधि अछि तहिना अपन जिनगीकेँ रघुनी बाबा शुरूहेसँ बनौने, दुनियाँक संग चलि आबि रहल छला। ओना, पोखरिक दशा देखि टुटल मनमे खुशीक हिलकोर सेहो उठिये रहल छेलैन जे जे छुटि कऽ टुटि गेल छल ओहो अनुकूल समय पेबैक अन्तिम सीमापर पहुँचिये रहल अछि।

वोआजी बाजल-

"बाबा, बहुत गरमी पड़ि रहल अछि, आब काज करैक समय नहि अछि।"

ओना, आजुक परिवेशमे जे शिक्षण संस्थान सबहक रूतबा भऽ गेल अछि, ओ एहेन भऽ गेल अछि जे जेते नव-नव संस्था (शिक्षण संस्था) बढ़ि रहल अछि ओते नव-नव चालि-ढाइलिक संस्कारो आ मनुक्खोक निर्माण भइये रहल अछि। खाएर जे अछि, वोआजीकेँ तइसँ कोन मतलब। बेठेकान जिनगीकेँ ठेकान लगा जीबि लेब तेतबे मतलबक जरूरत जहिना सभकेँ अछि तहिना वोआजीकेँ सेहो छइ। ओना, रघुनीबाबाक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे अपना सभ ने चूरा-दही-चिन्नी-अचार पबै छी आ बारह मासोक आ तेकर अधिया रीतुओ आ चारि मासक मौसमोक बारहमासा, छहमासा आ चरिमासा ओछाइनपर पड़ल-पड़ल गबिते छी, मुदा धरतीपर एहनो तँ देश अछिए जैठामक बासीकेँ जेहेन अपना सबहक जेठुआ रौद होइए तइसँ बेसिये रौद सालो भरि होइ छै, जहिना माघक शीतलहरीक जाड़ होइए तेहेन जाड़सँ ऊपरेक जाड़ सालो भरि–माने तीन साए पेंइसैठो दिन होइए। तहूठाम जँ मनुक्ख जीवन धारण केनहि अछि, तइसँ नीक तँ अपना सभ, सभ दिनसँ रहिते आबि रहल छी। मुदा बाल बोध पोताकेँ एते भरिगर विचार देब उचित नहि। मनमे बेसी दाव पड़ि जाइत। तहूमे अखन तक भरिपोख गपो-सप्प ने भेल छेलैन, जे तहूसँ किछु अनुमान लगैबतैथ। तखन तँ भेल जे जइ हिसाबे वोआजी बाजल तइ हिसाबक उत्तर देबे ने नीक हएत। सोझ-साझ जोड़-घटाउकेँ अनेरे दसमलवमे टुकड़ी-टुकड़ी करब उचित नहि। ओ तँ अपन जीवन सूत्र छी, जेहेन जीवन तेहेन सूत्र। अखन तँ वोआजी अठमा क्लासक विद्यार्थी अछि। तहूमे जँ रघुनीबाबाक जुग-जमानाक रहैत तँ ओहिना धड़िया पहिर पीपरक गाछ लग गुल्ली-डण्टा खेलैत, नहि तँ फुटबॉल-भोलीबॉल खेलाइत रहैत। ओना, वोआजीकेँ देखि रघुनीबाबाक मनमे ईहो उठैत रहैन जे एहेन समयमे जीन्स पेन्ट

पहिरने अछि आ आदेश..! मुदा पोता तँ पोते छी, तेसर पीढ़ीक निच्चाँकेँ तीन पीढ़ी ऊपर जेबाक छइ।

वोआजीक विचारमे विचारकेँ मिलबैत रघुनीबाबा बजला-

“बौआ, काज तँ छोड़ि कऽ बैसले छी। तहूमे भगवान तेहेन फेरी लगा देलैन जे अधासँ बेसी फलक गाछ सुखि जाएत।”

बाबाक बात सुनि बाल-बोध वोआजीकेँ जिज्ञासा जगल, बाजल-

“बाबा! ओ पुबरिया खेत जे अछि तइमे की लगौने छी?”

माछ पोसैक पोखरिक गति देखि रघुनीबाबा मने-मन कुही हुअ लगला। महाभारतक अन्तिम दिनक लड़ाइ जकाँ बाबाक मन अपन जीवनक संघर्षमे ओझराए लगलैन। अनेको विचार घनघोर बरखा होइत कालक पाइनिक बुलबुला जकाँ मनमे उठए लगलैन। 1970 ई.मे कौलेजसँ निकललौं। जे किछु अध्ययन कौलेजमे भेल ओ स्वावलंबी जीवनक भेल। ओना, स्वावलंबी सेहो अनेको रंग-रूपक अछिए मुदा से सभ किछु ने। अपन पैत्रिक जमीन रघुनीबाबाकेँ अपनो छेलैन। किसानक जागरण काल छल...।

मिथिलांचलक किसान कोसी नहैरक मुख्य शाखा कोसी धारसँ जयनगर तक जुड़ि गेल देखि आशान्वित भइये गेल छल। इलाकासँ रौदी मेटा जाएत.., नहैरक सस्ता पानि सालो भरि खेतीवारी लेल हएत.., जनकजीक मिथिला पुन: स्थापित हेबे करत...। तैसंग रंग-रंगक आशाक गीतो समाजमे गओले जाइ छल- ‘छिटा-कोदारि ले चल-चल...।’

ओही उठानिक समय रघुनीबाबा सेहो पाँच कट्ठा खेतकेँ पानिमे उसरैग देलैन। पोखैर खुनबैमे बेसी भीड़ो ने भेलैन, किएक तँ गामक बीचमे खेत छेलैन, लोककेँ माइटिक खगता छेलैहे, खुनि-

खुनि लऽ गेल। जइसँ मछपोसा पोखैर बनि गेल।

रौदी तँ अपना ऐठामक बुझल अछिए जे 19म शताब्दीमे पचीस बेर भेल। औसतन चारि बर्खमे एकबेर। तहिना बाढ़िक उपद्रव सेहो इलाका-इलाकामे रहबे कएल। जइसँ सदिकाल किछु-ने-किछु उजार-पुजार होइते आबि रहल अछि। असुविधाक चलैत रघुनीबाबाकेँ कहियो समुचित बेवस्था नहि भऽ सकलैन जे समुचित उपजा पोखैरसँ पबितैथ। बरसात समय पानिसँ भरै छल, अखुनका जकाँ रंग-रंगक माछोक किस्म नहियेँ छल, अखाढ़क जीरा कातिक तक कते उमझत। पोखैर सुखि जाइ छेलैन। ओना, अपना बोरिंग रहैन, मुदा तेलबला दमकल रहने खर्च बेसी भऽ जाइ छेलैन, तँए सम्हारि नै पबै छला। मुदा बिजली भेने मन पुन: अपन जुआनीक संकल्प जगि चुकलैन अछि। मन मानि चुकल छैन जे अगुताइ भेल...।

हारि-जीतक बीच रघुनीबाबा छेलाहे, पोताकेँ कहलैन-

“बौआ, आगू साल फेर अबिहह। पुरना रहुओ आ गाइयक दूधो-दही भरि मन खुएबह।”

वोआजी बाजल-

“अच्छा चलू। जे भेल सेहो बड़बढ़ियाँ, जे नइ भेल सेहो बड़बढ़ियाँ। काल्हि-ले काल्हि विचारि लेब।”

पोताक विचारमे अपन विचार मिलिते रघुनीबाबाक मनमे तीन पीढ़ी[1] ऊपरसँ तीन पीढ़ी निच्चाँ धरिक रूप-रेखा आबए लगलैन। एबो केना नहि करितैन, मनुक्ख मशीन नइ ने छी जे सालेमे सात-गुणा बढ़ि जाएब, मनुक्ख तँ मनुक्ख छी। हँ! तखन

[1] वंशगत परिवारमे

माल-जाल जकाँ सात पीढ़ीमे तँ नहि, मुदा मनुक्ख तीन पीढ़ीमे सोलहन्नी केचुआ जरूर छोड़ए। मुदा बाबाक मनमे ईहो शंका होएत रहैन जे नवतुरिया छौड़ासँ जँ मुँहमिलानी नइ राखब तँ अनेरे बकठाँइमे समय जाएत। विदा होइत बजला-

"चलह।"

❑ *शब्द संख्या : 1054, तिथि : 22 फरवरी 2019*

थैंक्यू पापा

चारि बजे भोरेसँ धीरज भाय जे किछु कऽ रहला अछि, माने नित्य कर्म ओ हाथ-पैरसँ कऽ रहला अछि आ ठोर पटपटबैत भगवानोक नाम लऽ रहला अछि...। भाय, एकरा अहाँ शंकराचार्यक अद्वैत नहि बुझब। कोसी प्रोजेक्टक कार्यालयसँ सेवा निवृत्ति बड़ाबाबू छैथ। जहिना अपन काम-धाममे लागल धीरज भाय मने-मन तृप्त रहै छैथ तहिना खुशीसँ उधियाइतो तँ रहबे करै छैथ। औझुका उधियाइक कारण छैन जे बेटा आइ मेडिकलक अन्तिम परीक्षा दिअ जा रहल छैन। ओना, होस्टलक विद्यार्थी अनुप, जे अपन ऐगला खेबा-खर्चाले काल्हियेँ गाम आएल।

मासे-मास अनुप अपन खर्चा लइले अबिते अछि तँए परिवारमे कोनो हलचल नहियेँ छल। धीरज भाय सेहो मने-मन बुझिये रहल छला जे सभ मास जहिना अनुप अबैए तहिना आएल अछि। ओना, धीरज भाय किसान-परिवारक लोक सभ दिन रहला, बीचमे नोकरीसँ सेवा-निवृत्त भेला पछाइत फेर अपन वृत्तिसँ किसानी जिनगी धारण कइये लेलैन अछि। दू साल पहिनहि नोकरीसँ सेवा-निवृत्त भेला।

धीरज भाइक जिनगीक स्वर्णकाल ओ छेलैन जखन कोसी नहरक खुनाइ चलै छल। ऑफिसोक ओ चुहचुही आब कहाँ रहल जे ओइ समय छल। भरि दिन प्रणाम-पाती आ भोज-भात चलैत रहै छेलैन। ओइ संस्कारमे धीरज भाइक नोकरीक आधा समय

बीतल छेलैन। नोकरी शुरू केलाक नअ बर्खक पछाइत अनुपक जन्म भेल। विभागो–जल-सिंचाई विभाग–आ विभागक कार्यालयो सबहक नीक चला-चलती छेलैहे। नोकरी शुरू केलाक तीन सालक पछाइतसँ धीरज भाय सौनक बरखा जकाँ पाइयक बर्खातर पड़ि गेल छला। एक दिस ठिकेदारीक तँ दोसर अस्थायी बहाली आ तेसर दिस दिल्लीक कार्यालयसँ लऽकऽ जिला कार्यालयक कार्यकर्त्ता सबहक आबाजाही रहने खेबा-पीबा-रहबाक ओरियान करैक जिम्मा धीरजे भायपर रहै छेलैन, जइसँ ऊपर-सँ-निच्चाँ तकक कर्मचारीसँ सम्बन्ध बनियेँ गेल छेलैन। ऐसँ एते बिसवास तँ बनियेँ गेल छेलैन जे जँ हरिद्वारसँ गंगासागर देखैत रहब तँ कोनो वैतरणी टपि सकै छी।

पाइयक आमदनीक चढ़ाउ समय, तँए धीरज भाइक मन सेहो चढ़िये गेल रहैन। अनुपक छठियार दिन चुपे-चाप पत्नीक दर्दमे मलहम लगबैत फुस-फुसा कऽ कहबे केने रहथिन जे ई बेटा तँ तेहेन लाल हएत जे कमाल करि कऽ देखौत।’ कबीरक जे पहिल चेलबा ‘कमाल’ रहैन से कमाल नहि, ऐठाम धीरज भाइक बेटा ‘अनुप’क प्रति अछि। सरकारी योजनाक क्रियान्वित केनिहार धीरज भाय, अपनो परिवारक योजना ओही रूपमे बनबै छला। जइसँ अनुपक पढ़ाइक ओरियान बच्चेसँ ओहन विद्यालय सभमे कएल गेल जे ग्रामीण परिवेशक कोन बात, बजरूओ परिवेशमे अगुआएल छल। माने हाइ लेभेलक।

नित्यकर्मसँ निवृत्ति भऽ धीरज भाय बेटाक खर्चक ओरियान केने दरबज्जापर बैसल-बैसल अपन जीवनक समीक्षा करए लगला। भाय रचनाकारक रचनामे ने गोल-माल हएत जे करवनो प्रिंटक दोख तँ करवनो बुझैक दोख तँ करवनो बुझबैक ढंगक दोख तँ करवनो किछु तँ करवनो किछु कहि दुतकारि लेल जाइए। मुदा

जीवन तँ से नहि छी, ओ तँ हर ब्रह्मक अपन-अपन सिरजन छी, रचना छी तँए अपन रचनाकेँ अपने समीक्षा करबसँ नीक भइये की सकैए। सेवा निवृत्त धीरज भाय, तहूमे मन तेते विचलित भऽ गेल छैन जे एकठाम असथिर रहिते ने छैन। करवनो किम्हरो तँ करवनो किम्हरो डोलिये रहल छैन। डोलैत-डोलैत बिसवास एते टुटि गेल छैन जे अपनोपर बीराने जकाँ बिसवास रहै छैन। तँए अपन समीक्षो करब कठिन भइये गेल छेलैन। मुदा तैयो धीरज भाय जी-जाँति कऽ पराती जकाँ असगरे गाबि रहल छैथ। पराती गीतक एक ओहन विधा छी जेकरा लोक जाड़क भोरमे बेसी आ आन मौसममे कम गबै छैथ। ओना, अरवनो ओहन ठकुरवारी सभ अछियो जैठाम पराती गबैक नियमित समय सालो भरि रखनहि छैथ। नीक बात, जैठाम ढोल-डम्फ, लॉडस्पीकरसँ जगौल जाइए तइसँ परातीक जगाएब नीक भेबे कएल। मुदा ओ पराती गबैक विधान की अछि। असगरे ओछाइनपर बैस कोकिल कण्ठसँ जन-जनकेँ जगाएबे ने भेल। ने साज-बाजक जरूरत आ ने दोसराइत-तेसराइत पलगाँइक खगता।

जननक प्रक्रियाक सुख-दुख आ दुख-पीड़ा सभ जनानीकेँ बुझले रहै छैन, जानले-मानले रहै छैन। तँए बिसवासक मलहम-पट्टी मनमे भेले रहै छैन। समयानुसार चंगा हेबे करै छैथ, बुझलमे अगुताएब की। मास दिनक पछाइत जखन भौजी–धीरज भाइक पत्नी–धीरज भायकेँ पुछलकैन- 'अपन लाल केहेन कमाल करत?' तँ मुँह फोरि धीरज भाय बिसवासक संग बजला- "अनुप डॉक्टर बनत।"

धीरज भाइक मन आइ डोल-पत्ता भऽ रहल छैन। जइसँ 'नरव-सिरव'क विचार नहि उठि 'सिरव-नरव'क भाव मनमे जगने मन तरसए लगलैन। तरसैत मनक बीच एकाएक विवेक बरैस गेलैन-

केकरा-ले एते केलौं..!

ऑफिसोक ओ चला-चलती धीरज भाइक जिनगीमे नोकरीक अदहे समय बितलैन। जइसँ चढ़न्त जिनगीमे अनेको मोड़ आबिये गेल छेलैन।

एक तँ सेवा-निवृत्तिक आमदनी, जे जीवन-पद्धतिकेँ एक्केबेर अदहा-अदही कइये दइए, तैपर परिवारमे उठल विवाद सेहो छेलैन्हे। चारू बेटाक बीच बटबारा भऽ गेल छेलैन। मुदा तैयो अनुपकेँ पढ़ा धीरज भाय जी-जाँति कऽ समाजमे अपन कीर्त्ति स्थापित कइये लेलैन। जइसँ मनमे संकल्पक कल्प सेहो जगलैन। जिनगीक नाह भलेँ भँसिया गेलैन मुदा डॉक्टर बेटा गढ़निहार समाजमे पहिल कुम्हार भेबे केलौं किने। मन बिहुसलैन। बिहुसलैन ई जे ब्रह्मचारी जीवनक अन्तिम विदाइये ने अनुपक भेल। आठम दिनसँ परीक्षा छिऐ...।

तहीकाल अनुप अपन कोठरीसँ निकलल कि धीरज भाय दरबज्जापर सँ उठि हाथमे रुपैआ नेने अनुपक आगूमे ठाढ़ भेला। तैबीच अनुप पिताकेँ ठढ़िया प्रणाम कइये नेने छल आ माइयोसँ असिरवाद लइये नेने छल जे एते-दिनक आस-बिसवास तोहर हम छेलियह आब तों हमर भेलह। जेकरा अनुप मुस्कुराइत अंगीकार केलक। मुदा केतेक अंगीकार केलक से तँ वएह जानत।

ओना, धीरज भाइक जे जीवन अखन बनि गेल छैन ओ पाइक पियासल भइये गेल छैन मुदा जिनगियोक तँ अपन व्रत-संकल्प होइते अछि। पाइयक पियासकेँ धीरज भाय मरूभूमि इलाकामे बसनिहार मोर जकाँ मनेमे मोड़ि मुस्की ठोरपर लऽ अनने छला।

पिताक हाथसँ पाइ अपना हाथमे लैत अनुप बाजल- "थैंक्यू

पापा..!”

बेटाक मुहसँ ‘थैंक्यू’ सुनि धीरज भाइक हृदय चूर-चूर भऽ गेलैन। तैबीच अनुप सेहो आगू बढ़ि गेल छल आ पत्नी सेहो ऑंगन चलि गेल छेलैन। दरबज्जाक चौकीपर आबि बैसते धीरज भाइक मन फुटलैन-

“यएह छी जीवन..!”

जे जीवन अखन धरि प्रणाम-पातीसँ लऽ कऽ भाए-भैयारीमे बीतल अछि, ओहन जीवनकेँ गतिमान बना सकै छी? आइ हम अपन बेटाक ऋृणसँ जरूर उऋृण भऽ रहल छी, तैसंग बेटा अपन कन्हापर भार उठबैक स्थितिमे सेहो आबि गेल अछि। तैठाम जँ बेटाकेँ एतबो ठेकान नहि अछि जे ‘थैंक्यू’ शब्द छी की। केकरो नाँगैर केकरो मुँहमे सटा पशुक जँ रूपेँ बदैल दिऐ, ई दीगर भेल!

अन्तो-अन्त धीरज भाइक मन ऐठाम आबि अँटैक गेलैन जे दुनियेँ छी, अरबो-खरबो जीवन अछि, तही बीच ने अपनो जीवन अछि, तइले तँ एतबे लूरिक ने काज अछि जइसँ अपने जीबैक लूरि भऽ जाए।



शब्द संख्या : 965, तिथि : 24 फरवरी 2019

किसुनपुराक हाट

मधुबनीसँ देवकृष्ण आएले रहैथ कि समय खटियाइत देखि लालभौजी जेना मोन पाड़ैत होथि तहिना बजली- “आइ हाटो छिऐ।”

देवकृष्ण सुतिहार जिनगीक लोक, पत्नीकेँ अँगनेमे एते काज सिरजबाए देने छथिन जे खगते भरि दुनू परानीक बीच गप-सप्प होइ छैन। हाट-बजारक काज देवकृष्ण अपने हाथमे रखने छैथ। तइसँ कहियो काल एहनो भइये जाइए जे कोनो-कोनो काज बिथुत रहि जाइ छैन। मुदा मनमे की गड़ि चुकल छैन से तँ अपने जनता। पत्नीक विचार सुनि देवकृष्ण भाइक मनमे उठलैन- दू दिनक मधुबनी कोर्टक थाकल छी तैपर आइ नहेबो ने केलौं हेन, साढ़े पाँच बजि रहल अछि, घन्टा भरिक पछाइत हाटो उसैर जाएत। जखने हाट उसरत तखने अपन काजो खगबे करत...।

पत्नीकेँ देवकृष्ण कहला- “बौआ केतए अछि, गामेक हाट छी, कहुना ते आब दस बर्खक भइये गेल, हेरा थोड़े जाएत। ओकरे पठा दइ छिऐ।”

मनमोहन अछि ओना दसे बर्खक मुदा हाइ स्कूलमे तँ पढ़िते अछि। कोनो कि पहिलुका हाइ स्कूल छी, जे साले-साल धिसियौर कटेला पछाइत अगुअबैत रहइ। लगमे अबिते मनमोहन बाजल-

“की कहै छी?”

देवकृष्ण बजला- “बौआ, हाटपर सँ तीमन-तरकारी अनैक

छह, से हेतह किने?”

हाटसँ खरीद-बिक्रीक कोन बात जे गामक हाट रहितो मनमोहन देखनौं ने अछि। ओना, रस्ते-रस्ते ओइ दऽ कऽ जाइ-अबैए जरूर मुदा जखन हाट उसरल रहै छै तखन, तँए हाटक किछु मनमोहन देखनहि ने अछि। संजोग बनल, देवकृष्ण भाइक पितियौत भाए केतौसँ आएले रहैथ कि लालेभाय जकाँ हुनको पत्नी मोन पाड़ि देलकैन। हुनकर अपन सोचो छैन आ किरियो कलाप अपन छैन्हे। पत्नीक गपकेँ रतिदेव कोनो हुक्मरानाक आदेश नइ मानै छैथ। मुदा नहियोँ नहियेँ कहै छथिन। अपन सोच छैन जे अपन बेकतीगत काज तँ आगू-पाछू हेबे करत, तइले कोनो धड़फड़ी अछि, मुदा पत्नीक काजकेँ जँ बाधक बनि जाए, सेहो केहेन हएत। तँए धड़फड़ाएल बाहरसँ एला पछातियो रतिदेव झोरा लेलक आ हाटपर विदा भेल। रतिदेवकेँ देखिते देवकृष्ण कहला-

“हाटपर जाइ छह रतिदेव?”

रतिदेव-

“हँ।”

देवकृष्ण-

“मनमोहनोकेँ संगे नेने जाहक।”

ओना, देवकृष्ण नहाइक विचार मनमे कऽ नेने छला मुदा थाकल-ठेहियाएल देह, मन भरिया गेलैन जइसँ देहकेँ उठैये ने दैन। मनमे उठलैन- गामक हाट केना बनल..!

देवकृष्णकेँ मोन पड़लैन ब्रह्मदेव, दुनू गोरे बच्चेसँ कौलेज धरिक संगी रहलौं। अखनो छी। पढ़ैमे ब्रह्मदेव हमरासँ नीक जहिना अखनो अछि तहिना पहिनौं छल। तेकर कारण छल जे ओकरा अखियास बेसी रहै छै, हम बिसराह अखनो छीहे। अर्थशास्त्रक

विद्यार्थी दुनू गोरे, तँए नेतागिरी करैक विचारे मनमे किए उठैत, ओ तँ उठै छै राजनीतिशास्त्रक विद्यार्थीमे। समाजो तँ सएह छी जे समाजक अर्थनीतिकेँ अगुआइ-पछुआइक बात बुझैये नहि चाहैए, ओकरा चाही चौक-चौराहा परहक मसल्ला। ओ बुझैए अमेरिकोसँ बीस थाइलेंडकेँ, जे क्रिकेटमे पचास रनसँ हेरा पचास गुणा नीक भेल की नहि। समाजक नेतो तँ वएह ने नीक जे भाषणसँ लिपिस्टिक कीनैले बैसलसँ उठा कऽ बजार दिसक रस्ता पकड़ा दिऐ।

ब्रह्मदेवो आ देवकृष्णो भाय कौलेज छोड़ि गाममे पाँच बरख जखन गिरहस्ती केलैन तखन अनुभव भेलैन जे उत्पादन लेल बजारो चाही। कहब जे जखन गामक खगताकेँ पूर्ति भऽ जेतइ तखन ने समान बाहर भेजब नीक हएत। मुदा अही संग ईहो प्रश्न तँ उठबे करत किने जे एक किलो मीटरमे पसरल भरि गाममे वस्तु केना पहुँचत। तँए, एकटा केन्द्र स्वरुप स्थानक खगता भइये जाइए। जइसँ आनो-आन गामक लोक आ गामोक लोक कीनबो-बेसाहबो करबे करत।

चारि बजे बेरुका समय, नरक-निवारण चतुर्दशीक हुमेला देवालय दिस सहनिहारो आ सहनिहारियोक आवाजाही बढ़ि गेल। जइसँ घर-आँगन पतरा रस्ता भरिया गेल छल। ब्रह्मदेव देवकृष्ण भाइक ऐठाम पहुँचला तँ देखलैन जे देवकृष्णो भाय सेहो दरबज्जेपर बैस रस्ते दिस देखि रहल छैथ।

ब्रह्मदवेकेँ देखिते देवकृष्ण बजला-

“संगी, एक सालमे एक गोरे केते पाप करैए जे ओही पापक निवारण करैले मेला जकाँ लोकक ढबाहि लागल अछि।”

ब्रह्मदेवक मन चकुआ गेल। मर्र ई की देवकृष्ण पुछि रहल

अछि! कोनो कि यमराजक हम ठिक्का-स्टाफ छिऐ जे धरम-पापक लेखा-जोखा भरि दिन करैत रहब आ जखने आदेश कानमे पड़ल कि ओकर हिसाब-वारी जोड़ि बाजब। ब्रह्मदेव बाजल-

"संगी आइये नहि, सभ दिनसँ अपना दुनू गोरेक बीच एक विचारक सम्बन्ध रहल अछि। जइसँ काजोमे एकरूपता आ जीवनोमे एकरूपता आबिये गेल अछि। तँए जे बात बुझल नइ अछि तइमे किछु बजने अड़ंगा लगत। चतुर्दशीक सम्बन्धमे एतबे बुझल अछि जे नरकसँ निवारण करैए।"

देवकृष्ण- "संगी, स्त्रीगण सभकेँ देखबहक जे जहिना धान-दे पुछबहक तँ बजबे ने करतह आ गोबरक चोत लग राखल भुस्सा-दे[2] टनाटन चानीबला रुपैआ जकाँ बजए लगतह। तूँ तँ जिनगी भरिक संगी रहलह, जहिना कोनो देशक अपन उत्पादन शक्ति जेतेक बढ़ैए, बुनियादी ढंगसँ ओकर उन्नतियो तहिना होइ छइ। कोनो मनुक्खकेँ कोनो विषय ओते जानै-बुझै आ करैक तँ अछिए जेतेटा ओकर जीवनभूमि अछि।"

देवकृष्ण भाइक विचार सुनि ब्रह्मदेवक मन पनपना गेल। पनपनाइते बाजल- "ऐसँ बेसी किछु ने नरक निवारण चतुदर्शीक सम्बन्धमे बुझल अछि।"

मुस्की दैत देवकृष्ण बजला-

"ई बुझल छह जे नरकक केते घाटक ई चतुर्दशी घटवार छी?"

देवकृष्ण भाइक विचार सुनि ब्रह्मदेवक मन जेना उग्र हुअ लगलैन तहिना बजला- "आइ तक एकोटा ने नरक निवारण

[2] गोरहा-चिपरीक कच्चा माल

चतुर्दशीक उपास केलौं हेन आ ने नरकक घाट बुझै छी। ऐसँ मतलबे की अछि।”

देवकृष्ण बुझि गेला जे ब्रह्मदेवक मन उग्र भऽ रहल अछि। मुदा बाजि किछु ने रहल अछि। जहिना धारक धाराकेँ बगलक कनबह बना कम कएल जाइए तहिना पत्नीकेँ सोर पाड़ैत देवकृष्ण बजला- “सुनै छिऐ! चाह पीना बड़ीकाल भऽ गेल।”

देवकृष्ण भाइक बातकेँ लाल भौजी जहिना सभ दिन चुहैट कऽ पकैड़ एली अछि तहिना चुहैट कऽ पकैड़ते बुझि गेली जे शास्त्रार्थमे केतौ दृष्टिकूट आबि गेलै हेन तँए चाहक खगता भेलैन। जहिना ब्रह्मदेव गुमे-गुम तहिना देवकृष्ण सेहो गुमे-गुम एक दोसरकेँ निहारियो रहल छला आ समाज विकासक गुम भेल रस्ताकेँ सेहो गमि रहल छला।

चाह पीबिते जेना दुनू गोरेक चाह जगलैन तहिना पहाड़ी नोकर–एकबोलिया बहादुर–जकाँ तँ नहि, मुदा अपन चाह जगजिआर होइत जरूर जगलैन। देवकृष्ण भाय बजला-

“संगी, गामक आवाजाही जाबे बाहरसँ नहि बढ़त ताबे अपना सबहक मेहनत सदिकाल सड़िते रहत। तँए गाममे एकटा हाट लगबै पाछू पड़ह।”

ब्रह्मदेव-

“विचार तँ बढ़ियाँ उठौलह। मुदा हएत केना?”

देवकृष्ण-

“तोहर की विचार?”

ब्रह्मदेव- “जइसँ अपनो आ समाजोक बढ़बाढ़ि हएत ओ बेकता-बेकतीटा केने नइ ने हएत।”

देवकृष्ण भाय बजला-

“चलह गाममे पहिने एकर जानकारी दहक। जखने जानकारी छिड़ियाएत तखने ने रंग-रंगक विचार सभ सेहो बितिआएत, वृद्धि करत।”

सएह भेल। कोनो काजक शुरूआत उकड़ू होइते अछि मुदा अपनो दिस ने देखए पड़त जे हमहूँ तँ एक्कैसमी सदीक मनुक्ख छिऐ। उकड़ूकेँ सुकड़ू केना बनौल जाए, यएह ने भेल समाजक भार।



शब्द संख्या : 995, तिथि : 25 फरवरी 2019

धनखेतीक बैगन

विचारपुरक हाट। नमगर-चौड़गर आँट-पेट हाटक अछिए। तँए ने 'एकहट्टा' नै कहि 'बहुहट्टा' कहल जाइए। एकहट्टा भेल ओहन हाट जइ हाटमे एक्के रंगक वस्तुक खरीद-बिक्री केनिहार होइथ। भलेँ ओ रंग-रंगक डिजाइनमे सइयो रंगक किए ने हुअए। मुदा से नहि, हरिहर क्षेत्रक हाट जकाँ हाथी-घोड़ासँ लऽ कऽ चिनियाँ-मुनियाँ[3] तकक खरीद बिक्री विचारपुर हाटमे तहियेसँ होइए जहियासँ हाट लगल। ओना, केते लोक हाटक सम्बन्धमे ईहो कहै छैथ जे 'विचारपुरक हाट बहबाँड़िक हाट छी! नीक लोकक हाट नइ छी।'

नीक लोकक माने जानकार लोक। जानकार भेला ओ, जेकर मात्र एक वस्तुक उदाहरण लिअ। पाकल केरा अछि, कियो प्रसाद बुझि बँटितो छैथ आ कियो परसाद मानि पेबितो छथिए। मुदा से नहि, जानकार भेला ओ जे केराक वंश-वृक्षसँ लऽ कऽ धरतीपर केना स्थापित भेलसँ लऽ कऽ पातपर भोज-भात, फूलसँ बिआही मरबा सजबैक संग-संग भोज्यक अमृत अंशकेँ–पौष्टिक तत्त्वकेँ– जानि ओकरा अंगीकार केनौं छैथ आ करैबतो छैथ। जनकपुर राजधानीक मिथिलामे केराक ओ महात्म जानि महात्मा/चिन्तक केराकेँ नबेद[4] स्वरूप सभठाम सभ जगह स्थापित करैत भूमिमे

[3] छोट चिड़ै

[4] नवेद्य

एहेन स्थापित केने छैथ जे सौंसे मिथिला पसरले अछि। भलेँ ओ आधुनिक परिवेशमे बिरहा किए ने गेल हुअए। बिरहाइक माने भेल उपैट जाएब।

तीस साल बंगलोरमे इंजीनियरक जिनगी बितौला पछाइत नवीननाथ सेवा निवृत्त भऽ गाम एला। ढहल-ढनमनाएल घर सभकेँ तोड़ि नबघर-आँगन सेहो बना लेलैन।

जिनगीक अन्तिम पड़ावमे पहुँचल नवीननाथ शहरी जिनगी आ गामक जिनगीक बीच जे अनेको धारा प्रवाहित होइत बीच-मझधारमे जहिना कियो उगडुम करैत रहैए तहिना नवीननाथ सेहो अपन जिनगीक धारमे उगडुम जखन करए लगला तखन निर्णयात्मक मनमे विचार जगलैन जे नइ किछु जानी तँ बहुजन मानी। माने भेल जइ समाजमे अधिकांश लोकक जे बेवहार छै जँ तेकरा अङ्गेजै छी तँ कोनौं समाजमे अँटावेश भइये जाएत। तहिना अपनाकेँ नवीननाथ सेहो अङ्गेज लेलैन। जइसँ एते गुण तँ बेवहारमे आबिये गेल छैन जे जहिना गंजी-लूँगी वा सोझे[5] धोती पहिरने कन्हापर गमछा नेने लोक अपन गामक हाटक काज करै छैथ तहिना नवीननाथ धोती पहिरैक आदती तँ नहि, मुदा लूँगी, चट्टी आ गंजी पहिरने कान्हपर गमछा नेने हाटपर पहुँचला।

विचारपुरक जहिना नमहर हाट तहिना लोकक भीड़ो। तरकारी किनैक विचारसँ नवीननाथ हाटपर एला। सभ तरकारीक फुट-फुट पतियानी लगल दोकानक बजार देखलैन। ओना, गमैया हाटमे एहनो होइते अछि जे एकोटा बेचनिहार अनेको रंगक वस्तु बेचै छैथ। एहेन छोट हाटमे होइए। नमहर हाटमे वस्तुक संख्या समटा एकठाम आबि जाइए। तइले ईहो जरूरी अछिए जे ओकर

[5] केबल

वस्तुक निकास बेसी नहि तँ ओते हेबै करै छै जे जेते ओकर मेहनताना हेबा चाही। सभ तरहक तरकारीक पतियानी फुट-फुट।

कातेसँ जखन नवीननाथ हिया कऽ देखलैन तँ बैगनक हाट नम्हरो आ बेसी भरिगरो बुझि पड़लैन। सहैट कऽ नवीननाथ बैगनक पतियानी लगल बजार दिस बढ़ला। रंग-रंगक बैगनसँ सजल बजार। जहिना गोलकीसँ गोलका भाटिन धरि अनेको रंगमे, तहिना नमकी सुतपुतियासँ लऽ कऽ हाइ ब्रिडक दू-हत्था बैगन धरि। अनेको रंग, अनेको मोटाइमे बैगन सजल छेलैहे। आगू बढ़ि नवीननाथ अपने सन उमरदारक दोकानपर पहुँच ठाढ़ भेला। अपने सन दोकानदारक दोकानपर जाइक कारण नवीननाथक ई छल जे नव-तुरियाक बेवहार हिनका पसिन नइ छैन। ऐगला गहिंकीक लेन-देन देखि बुझि गेल छला जे की दरमे बैगन चलैए।

गहिंकीकेँ पतराइते माने पहिलुका गहिंकीकेँ समान लइते नवीननाथ अगुएला। दोकानदार अपन वस्तुक परिचय दैत बजला-

“भाय, धनखेतीक बैगन छी, निरोग बैगन अछि। देखै छिऐ केतौ भूर-भार छइ?”

आइ पहिल दिन नवीननाथ धनखेतीक बैगनक नाओं सुनलैन, तँए बुझैक जिज्ञासा सेहो जगलैन। ओना, अपन जिनगी दिस आ गामक हाटक दृश्यकेँ मिलौलैन तँ बुझि पड़लैन जे जेते बैगनक पीठपर हमर नाम लिखल छल तेते भरिसक नइ पुरल अछि। कहब जे बैगनक पीठपर नाम की भेल? तँ जहिना ‘नेपालीजी’ अन्नक पीठपर लिखलैन तेकर कारणो अछिए जे पाइबलाक लेल जहिना महग तरकारी नीक भेल तहिना कम पाइबलाक लेल सस्त तरकारी नीक भेल। ई तँ जेबीपर निर्भर करैए। तैसंग ईहो तँ अछिए जे इलाका-इलाकाक अपन खान-पान

सेहो अछिए। तँए अमेरिकामे रहने अमेरिकन बनि अमेरिकी भोजन करए पड़ै छइ। तैठाम तँ अपन बाप-दादाक मिथिलाक अदौड़ी, बड़ी, सकरौड़ी, तिसियौड़ी, बियौड़ी, फुलौड़ी-पकौड़ी तँ बिसरै पड़त किने।

बंगलोरमे रहने नवीननाथक भोजन बदैल गेल छेलैन तँए जेतेक बैगनक पीठपर नाओं लिखल छेलैन से नइ पुरलैन। अपन दोख जहिना मने-मन रखि दोसरकेँ नहि कहए चाहै छी तहिना नवीननाथ सेहो अपन दोखकेँ बिना दुख केने मनेमे रखि नेने छला।

ओना, आन दोकानसँ कम गहिंकियो आ दोकानमे समानो कम अछिए। अपन तीन कट्ठा बैगन खेतक पाड़क हिसाबसँ समानो कम हेबे करत। किए तँ छह-सात दिनपर बैगन तोड़ैक पाड़ होइए तइ हिसाबे कम्मे खेतक बैगन भेल। रोहित सेहो संतुष्ट भऽ गेल छैथ जे चलितो-चलितो बिका जाएत। तँए नवीननाथसँ बैगनक विषयमे गपो करैक विचार भेलैन तँ जेबीसँ तमाकुलक चुनौटी निकालि नवीननाथकेँ दोहरबैत पुछबो केलखिन-

“भाय, तमाकुलो खाइ छी?”

नवीननाथक मनमे बिहाड़ि जकाँ उठि गेल छेलैन जे एकटा साधारण किसानक मुँहक बात..! तँए अपन मनकेँ स्वच्छ करैक खियालसँ बजला-

“गहिंकियो पतराएले अछि ताबे बैसै छी। पहिने अहाँ तमाकुल खाउ। काजसँ मन भरिआएल हएत।”

नवीननाथक बात रोहितकेँ कठाइन लगलैन, कठाइन ई लगलैन जे मुँह फोरि कहिऐन ‘रेहल-खेहल काज केनिहारकेँ मन नइ भरिआइ छै!’ मुदा चुपे रहला। चुनौटीसँ चुन-तमाकुल निकालि जखने रोहित तरहत्थीपर औंठा देलैन कि मनमे तेजी एलैन। हाँइ-

हाँइ तमाकुलपर औंठो रगड़ैत आ मने-मन आगूक गपो-सप्प करैले तैयार होइते रहैथ कि बिच्चेमे बजला- "अहाँ, अनठिया गहिंकी जकाँ बुझि पड़ै छी।"

पढ़ल-लिखल नवीननाथ एते तँ बुझिते छला जे गप-सप्पक क्रममे अपन बिनु बुझल बात बाजि देब नीक नहि। किए तँ, धारक पानि जकाँ बजनिहारक धार सेहो फुटिते अछि। ओही क्रममे जवाब आबि जाएत, बुझैले मुँह छोहैनो ने करए पड़त आ बिनु मंगने भेटियो जाएत। नवीननाथ बजला-

"हँ! बंगलोरमे सौंसे जिनगी बीत गेल, गामक सभ किछु बिसैर गेलौं। तँए अनठिया भइये गेलौं।"

तैबीच रोहित तमाकुल मुँहमे दैत ओकर रससँ अपन विचारक रस मिला नेने छला। बजला-

"मिथिलाक सभ गुण जग-जाहिर अछि जे सभ तरहेँ मिथिला सम्पन्न अछि, मुदा..?"

नवीननाथक जिज्ञासा बढ़बैले रोहित बजला आकि अपन मिथिलाक अनुभव बँटैले बजला से रोहित जानैथ। मुदा बजला एतबे जे 'लोक एकरबा बानर जकाँ एकरबा किसान हमरो कहै छैथ।'

प्रश्न-पर-प्रश्नक बर्खासँ नवीननाथ ठकठका कऽ ठमैक गेला। ठमकैत बजला-

"से की?"

रोहित बजला- "बैगन बरहमसिया तरकारी छी। जेकरा छहमसिया बना उपजौनिहार अपना ऊपरमे ओढ़ि लेलैन। गाममे जे ऊँचगर जमीन अछि, जेकरा भिट्ठा कहै छिऐ, मात्र ओहन खेतमे बरसाती बैगनक खेती होइत आबि रहल अछि। ओइ छहमसिया

खेतीकेँ बरहमसिया हम बनौने छी। आसिनी धान काटि कातिकमे बैगन रोपै छी आ ओ पूससँ फड़ए लगैए।"

नवीननाथ बजला-

"बाह..!"

रोहित बजला-

"भाय, अहाँ सभ बुझनुक लोक समाजक भेलौं। 'एकार' कहि हमर काजकेँ जे सभ छँटलक वएह सभ 'एकार' कहि गामक खेतीकेँ सेहो रोकलक। चलू आब अपन काज करू। केते बैगन लेब?"

नवीननाथ-

"मन ते होइए जे सभटा लऽ ली, मुदा पत्नीकेँ विन्यास बनबैक लूरियो रहैन तखन ने। एक किलो दऽ दिअ।"

❑

शब्द संख्या : 1051, तिथि : 28 फरवरी 2019

चितवनक शिकार

आइ गणेश जन्मोत्सवक दिन छी। गणेश जन्मोत्सवक उमंगक संग-संग चितवनक शिकारक दिन सेहो छी। रंग-रंगक शिकारी शिकार खेलए निकलबे करता। की राजा, की परजा, की धनीक, की गरीब, की बुधियार, की बुड़िबक, की लूल्ह-नाँगर की हरगर-कटगर देहबला.., सबहक मनमे जहिना उत्साहक संग-संग उमंग जगल छैन तहिना शिकार पकड़ैक बिसवासो छैन्हे। औझुका दिन वएह दिन छी जे शिव-पार्वती कहियौ आकि गौरी-शंकर कहियौ, जहिना अपन बिआहक समय गणेशाक पूजन केने रहैथ तहिना...।

चितवन ओहन वन अछि जे धरतीसँ अकास धरि पसरल सेहो अछि आ उसरलो तँ अछिए। ओना, केते गोरे ईहो बुझै छैथ जे चितवन ने धरतीएपर अछि आ ने अकासेमे अछि। खाएर जे अछि ओ तँ भूगोल पढ़निहार सभ अपन सीमा बनौता जे चितवन केतए मानब। अकासमे मानब कि धरतीपर मानब आकि पहाड़ जकाँ धरतीपर जनैम अकासक बीच मानब।

चितवन जहिना सुन्दर सुगन्धयुक्त धरतीपर पसरल अछि, तहिना रंग-रंगमे रंगाएल फूलो-पात आ बेलो-पात अछिए। तैसंग चन्दन सन सुकाठ, तहूमे ओहन चन्दनक वृक्ष जे चन्द्रकृत आकारक फलो दइए आ फलक रसमे रसियाइत लबनता[6] सेहो

[6] लावण्यता

दइते अछि। तँए कहब जे चितवनमे सभ एहने गाछ-बिरीछ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जहिना बोनाएल सौखक गाछ अकास टेकने अछि माने वनक ओहन वृक्ष जे नमहर होइतो ने अपन फूलमे ओहन गुण सिरैज सकल जे देवसिर चढ़ैत आ ने फले ओहन सिरैज सकल जे देवमुख पहुँचा सकल। ओ चाहबे ने केलक कि मनमे उठबे ने केलै आकि बुझबे ने केलक से तँ वनक सौखक गाछ बुझत-जानत आकि गाम-घरक बाग-बगियाक शीशो गाछ जानत। कहब जे ताड़ तँ ओहूसँ नमहर होइए, मुदा ओ तँ वृक्ष छीहे नहि, किए तँ वृक्षमे डारि-पात होइ छइ। ओना, घर बनबैमे दुनूक[33]–माने सौखोक आ शीशोओक–योगदान भरपुर अछिए।

जहिना खाइले फूल-फलक खगता होइए तहिना ने रहैले घरोक खगता अछिए। दुनू जीवनक अंग छीहे, तँए अंगीकार करब तखने ने ओ खगता-बेगरता पूरत जइसँ जिनगीक सड़कपर कटारि-कोचाढ़ि नइ हएत।

चितवनमे जहिना अकास ठेकल-ठेकनाएल गाछ-बिरीछ अछि तहिना जीव-जन्तुसँ सेहो भरल-पुरल अछिए। चितवनमे बाघ-सिंह आ हाथी-घोड़ासँ लऽ कऽ नढ़िया-कुकुर धरि सेहो बसिते अछि। वनक जहिना बाघ-सिंह तहिना गाम-घरक हाथी-घोड़ा छीहे। मुदा दुनूक-दुनू एहेन अलूरि-अल्हर अछिए जे ने अपने अपन भोजनेक उपैत कऽ सकैए आ ने अपन घरे बना सकैए। ओइसँ नीक तँ बाध-बोनक मूस अछि जेकरा गणेशजी सन दरबारो भेटल छै आ धोधिगर-पेटगर सवारो तँ छइहे। किए तँ वएह ने माने मूसे ने अपनाकेँ ओहन बुझैए जे धरतीक भार बनि नइ छी। तँए, कियो–चरिटंगा जानवर–जे आँखियो देखौतै से ओ थोड़े मानत आकि मानैले तैयारे हएत। जहिना खाइ-पीबैक अन्न-ले बखारी बनौने अछि तहिना भरल-पूरल सम्पन्न परिवारो बना वएह ने रहैए। वैहटा

ने एहेन वनक चरिटंगा अछि जेकरा परिवारोक चिन्ता छै आ परिवारक संग गुजरो-बसर करब तँ छइहे।

रंग-रंगक रूप-मोहनी चिड़ै-सभसँ जहिना चितवन सम्पन्न अछि तहिना मोर-मोरनीक नाचसँ सेहो सम्पन्न अछिए। चितवनक चित्त चिकोर पकड़ैबला जहिना चिड़ै-चुनमुन एक दिस अछि तहिना कौआ-मेना नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। पेट भरने जहिना फल भोगैए तहिना पेट जरने जेतए जे भेटै छै सेहो तँ भोगिते अछि। दुनियाँक बीच बसल ने चितवन अछि, तँए सभ कथुक बासो अछिए जे उचिते अछि किने। नदी-सरोवर-झील भलेँ बोनमे नइ हुअए मुदा चितवनक मनमे मानसरोवर आ कैलाश पर्वत नइ बसल अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। जखन ओहो अछि तखन ओइ पानिमे बसैबला चिड़ै/राजहंससँ लऽ कऽ भ्रमित भोम्हरा धरि सेहो अछिए। तैसंग जीव-जन्तु-जानवरोक बेहिसाब बास तँ अछिए। जहिना धरतीपर थलकमल तहिना झील-सरोवरक पानिमे कमल सेहो फुलाइते अछि। भलेँ ओइ झील-सरोवरक जलदाता बहैत धारे वा झहड़ैत अकासेमे होइ वा नइ होइ मुदा बहैत धारक धारामे जलकमले आकि थलकमले फुला सकैए। सबहक अपन-अपन सीमा छै, सरहद छै, आड़ि छै, मेड़ छै, विचार छै आ विचारक संसार सेहो छइहे।

से की कोनो कमले आकि थलकमले टाक मुँह अछि। सबहक अछि। वएह कोसी कि कमला आकि नारायणीए अछि, सभ गामोक आ सभ लोकक अपन-अपन अछिए। ओहुना देखै छी जे जहिना दूटा मनुक्खक मुँहक रंग-रूप एकरंग तनाउतार नइ होइए, तहिना दू गोरेक[7] हाथक लिखक अक्षरक गति सेहो एकरंग

[7] बेकतीक

नहियेँ होइए। आब अहाँ कहबै जे अक्षरकेँ नापि-जोखि एकरंगमे प्रयोग करू से अपने बुझलासँ हएत आकि हस्त-ब्रह्मक जे चित्तपन रहत ओइ अनुकूल हएत। कहब जे जहिना लोकक हड़गर-कठगर मुँह आ हाथक लिखक अक्षर दू गोरेक एकरंग नइ होइए तहिना कि ओइसँ ओकर मन कम छइ। ओहो ने ओही दुनू जकाँ बेजोर सेहो अछिए। गामे ने वन छी। ओकरे ने लोक अपन-अपन मने बनो कहै छै आ गामो कहै छइ। वन ओइ रूपमे कहै छै जे रूपमे ओ अपन रूप-रूपायित करए चाहैए। जेना लोकक वन, आमक गाछीक वन, गाइयक वन, इत्यादि-इत्यादि...। परिवार जहिना एगच्छा गाछ भेल आ परिवारक समूह टोल-गामक रूप परिवारक बोने ने भेल।

शिकारक मुहूर्त्त जगल। सौंसे गामक लोक शिकार खेलैले घरसँ निकलल। चरित्तर आ चतुरानन सेहो संगीक भाँजमे अपन-अपन रस्ता ओगइर शिकारी सभ दिस देखि रहल छला। थोड़बेकालक पछाइत दुनू गोरे अपन-अपन दुआर-दरबज्जासँ उतैर सड़कपर एला। अबिते घोड़ा जकाँ हिहिया कऽ नहि बल्कि मुस्कुराइत चरित्तरो आ चतुरोनन मुँह-मिलानी केलैन। दुनू जहिना एक टोलक तहिना एक उमेरक सेहो छथिए। चरित्तर बजला-

“भजार, अखन तँ शिकारक मुहूर्त्त अछि।”

चतुरानन- “से की अपने दुनू भजार बुझै छी आकि सौंसे गामक सभ बुझै छैथ।”

चरित्तर-

“सब आगू बढ़ि गेल, अपना सब तँ..?”

चतुरानन- “भजार, कियो आगू बढ़ह आकि पाछू रहह,

सबहक मनक अपन-अपन शिकार अछिए, जेकरा पाछू जिनगी भरि ओ रने-बने वौआइते अछि।"

मुड़ी डोलबैत चरित्तर बजला-

"भजार, रने तँ कम लोक वौआइ छैथ मुदा वने बेसी वौआइते छैथ जे सभ देखबे करै छी। तखन अपना-सबहक शिकार केना हएत। आ जखन शिकारे नइ हएत तखन शिकारीक मुहूर्त्त केना भेल। आइ ओकर मुहूर्त्त छी, कहाँदन गणेशजीक पतरामे उचरलैन अछि।"

चतुरानन-

"भजार, जखन पतरा उचारनिहारे मूसक सवारीपर चढ़ि माए-बापक तीरपेखैन करिते स्वर्ग-नर्क सभकेँ देखि अबै छैथ तखन तँ अपना सभ सहजे मनुक्ख भेलौं तँए किछु करैक अछिए नहि..!"

तैबीच बोन दिससँ कियो नढ़िया तँ कियो गीदरकेँ मारि अपन-अपन कान्हपर लटकौने आबि रहल छला। जेकरा देखि चतुरानन बजला-

"भजार! मुहूर्त्त तँ मुहूर्त्त छी। ओ ने केकरो करखनो संग छोड़ैए आ ने केकरो संग दइए, अपना-अपना मने लोक ओकर नीक-अधला रूप बना उपयोग करैए। उपयोगेटा नइ करैए, अपनाकेँ तेहेन उपयोगी सेहो बनाइये लइए जे दुनियाँक चाह बनैए।"

एक तँ दुनू गोरे–चतुरानन आ चरित्तर–बच्चेसँ एकठाम रहला, तहूमे भजारक अपेक्षा सेहो छेलैन्हे। तैपर चतुराननक दादीक कहब छैन जे दुनूक नक्षत्र (लक्षण) एक्केरंग छै, किए तँ दुनूक जन्म एक्के समय एक्के दिन भेल तँए जेतबे दिन-राति, बरखा-बुन्नी पानि-पाथर, झाँट-बिहाड़ि आ भुमकम चरित्तर देखलक तेतबे चतुरानन सेहो ने देखने अछि, तँए दुनूक नक्षत्र एक्केरंग ने भेल।

चतुरानन बजला-

“भजार, हमर एकटा विचार।”

चरित्तर-

“की?”

चतुरानन-

“जहिना जानवर जानवरक शिकार करैए तहिना जेतेक जीव-जन्तु अछि अही प्रक्रियामे सेहो अछिए। मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी किने भजार।”

चरित्तर-

“भजार, जहिना शिकार शिकारीक तहिना ने शिकारीक शिकार सेहो छीहे।”

चतुरानन-

“बरबेस।”



शब्द संख्या : 1071, तिथि : 02 मार्च 2019

बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं

ओछाइनपर सँ उठले रही कि जीबछ भाय दरबज्जाक आगूमे खरखास केलैन। ओना, खरखाससँ नहि बुझि पेलौं जे जीबछ भाइक खरखास छिऐन मुदा घ्वनिसँ बुझि पड़ल जे अकासक उड़ैत टिटहीक छी, तँए केतौ बिसाएत..! मुदा लगले ईहो भेल जे अकासक टिटहीक आवाज दोसर रंग होइ छै से तँ छी नहि। मने-मन गुनधुनाइतो रही आ डेगे-डेग ससैर कऽ बाहरो एलौं। जीबछ भायपर नजैर पड़िते बजलौं-

“जीबछ भाय! भोरे-भोर अहाँक दर्शन भेल, औझुका दिन शुभ रहत।”

जीबछ भाय अपनाकेँ शुभदाता बुझि विचारलैन आकि शुभ घटनाक आबाही बुझि से तँ जीबछ भाय जनता, मुदा एतबे बजला-

“बौआ, कमरसाइरसँ घुमैतकाल राधेश्याम काका भेँट भेला। दरबज्जेपर बैसल रहैथ, देखिते सोर पाड़लैन। असथिरसँ लगमे जा पएर छुबि गोड़ो लगलयैन आ मुहोँसँ बजलौं।”

तइ समयमे राधेश्याम काकाकेँ ब्लड-पेसरक झोंक एलैन आकि ओहिना अपन मन धधकलैन से राधेश्यामे काका ने जनता। मुदा एतबे बजला-

“बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं।”

कहि चुप भऽ गेला। की जवाब दैतिऐन। जिनगी भरि पोथी-

पुराणक बीच जिनगी गुजारलैन ओ आ कौल्हुका छौंड़ा भऽ कऽ की जवाब दैतिऐन। मुदा चुल्हिमे जहिना मिझाएल-पझाएल आगिकेँ खोंरनीसँ बाहर निकालि चुल्हिमे जारन देलासँ जहिना आगिक बढ़बारि होइए तहिना बजलौं-

"काकाजी!"

'काकाजी' सुनि राधेश्याम कक्काक मन जेना ठमकलैन। मुदा व्यग्रताक उग्रता जे मनमे पजैर गेल छेलैन ओ ओहिना लहलहा रहल छेलैन। बजला-

"बौआ, एकटा विचार पुछै छिअ।"

राधेश्याम कक्काक विचार सुनि मनमे भेल जे हम कहियाक विचारी हिनकर रहलौं जे हमरासँ विचार पुछता? फेर मनमे भेल जे विचारक माने एतबे नइ ने होइए जे कोनो गम्भीरे विषयक विचार हुअए, ओ तँ साधारण नून-तेलक जे दाम बढ़ैए तेहनो होइए।

विचार बुझैक मन बना राधेश्याम काका दिस नजैर उठेलौं। नजैर-मे-नजैर मिलिते राधेश्याम काका बजला-

"हमर की गति हएत?"

'हमर की गति हएत' राधेश्याम काका सन लोकक मुहेँ सुनि मनमे पथराएल चोट जकाँ झाँइ-दे लगल। की राधेश्यामे काकाटा एहेन परिस्थितिमे फँसि गेल छैथ आकि समाजमे हिनका सन-सन आरो लोक छैथ? हमर की गति हएत, गतिक माने समयसँ लगौल जाइए जे दिशा भेल। मुदा दिशाक दशा जे अछि सेहो तँ हेबे करत किने। ओना, ई बुझल अछिए जे राधेश्याम काका अढ़ाइ-तीन घन्टा पूजापर सेहो बैसनिहार छथिए। भलेँ पूजाक सामग्री जुटबैमे तबाही किए ने होइत होनु, ई दीगर भेल...।

विचारकेँ सानि-बाटि बजलौं- "काका, अपना केने थोड़े किछु

होइए, सभ ऊपरकाक हाथमे छैन। जाइ छी। हुनकर जेहेन मरजी रहतैन तेहने ने अरजियो लेता।”

ओना, हम अपन जान छोड़बैत निकलए चाहै छेलौं मुदा राधेश्याम काका गम्भीर भऽ गेला।

जीबछ भाइक विचारमे डुमए लगलौं। जेते डुमैत जाइ तेते जेना इजोत भेटल जाए..! बजलौं-

“भाय! भिनसुरका समय छी, अखने सुति कऽ उठलौं हेन। अहाँ बहन्ने हमरो पत्नी बिस्कुटो खुऔती। चाह पीब लिअ।”

ओना, जीबछ भाइक मनक तनतनीसँ बुझि पड़ि रहल छल जे बजैक इच्छा जोर मारि रहल छैन। चाहक नाओं सुनि जीबछ भाय बजला-

“पहिने एक गिलास पानि पीआबह, पछाइत चाह पीब।”

जहिना सबहक पत्नी पतिक गप-सप्पक कनसोह लइए आकि अतिथि-अभ्यागतक आगमन देखि खिड़की लग ठाढ़ भऽ सुनैए तहिना पत्नी ‘एक गिलास पानि’ सुनि लगले नेने पहुँचली। हाथमे पानि देखिते पत्नीकेँ कहलयैन- “एक लोटा हमरो दऽ जाएब। कुर्ड़ो कऽ लेब आ पीबियो लेब।”

ओना, मने-मन पत्नी कुड़बुड़ेली मुदा मुँह खोलि बजली किछु ने। अपने तँ पत्नीक कुड़कड़ाएब कनी-मनी बुझियो गेलौं मुदा जीबछ भाय बुझला कि नइ बुझला से तँ वएह जनैथ। अपनाकेँ निर्बल-निश्चल बनबैत जीबछ भाय बजला-

“बौआ, अपन हारल आ बोहुक मारल बुड़िबकहा तँ बकि लइए मुदा काबिल लोक थोड़े मुँह खोलि बजता। ओ तँ कहबे करता किने जे सभ बात सभठाम नइ ने बाजल जाइए। आ जँ सएह भेल तँ बुड़िबक-काबिलमे अन्तरे की भेल।”

जीबछ भाइक बात सुनि मनमे जेना उत्कंठा जगल तहिना भेल। बजलौं-

"से की भाय साहैब?"

संजोग बनल, पत्नी चाह नेने पहुँचली। जीबछ भाय आ अपनो पानि पीबिये नेने छेलौं। जीबछ भाइक मन जेना उड़ी-बिड़ी लगल होनि तहिना बुझि पड़ल। मुदा तैबीच चाह हाथमे चलि आएल रहैन। एक घोँट चाह मुँहमे लइते बजला-

"बौआ, राधेश्याम काका बड़-बड़ लीला राज मोरंगमे केने छैथ..!"

एक दिस जीबछ भाइक चेहराक उदासी नजैरसँ देखि पड़ैत रहए आ दोसर दिस मनचोभिया नाचक साजक संग आवाज दऽ रहला अछि! जरूर किछु रहस्यमय विचारमे छैन। मुदा से टोकचाल केने बुझबामे गड़बड़ा जाएत। किए तँ कोन विचार जीबछ भाइक मनमे रहस्यपूर्ण भरल छैन, से अपने केना बुझब। बकटैँट जकाँ किछु-सँ-किछु बाजि देब जेकर जवाब दइमे जीबछ भाय लगि जेता, जइसँ अपन मनक बात मनेमे गराएल रहि जेतैन। पोचारा दैत बजलौं-

"भाय साहैब। अहाँ सभतरहेँ श्रेष्ठ छी, अरवने किए जिनगी भरि अहाँ सोझहामे हम बाले-बोध बनल रहब। अहाँ पढ़लो-लिखल बेसी छी, घुमबो-फीरबो बेसी करै छी आ काजो बेसी केनहि छी। तैसंग अपन एते नमहर कारोबार सम्हारिये रहल छी।"

अपन इमनदार-जिनगीक बात सुनि आकि हमरा मुँहक सत् बात सुनि जहिना पहाड़क झरनाक झहरैत पानि धरतीमे उतैर धीरे-धीरे निर्बल-निश्चल हुअ लगैए तहिना जीबछ भाय निश्चल होइत बजला- "बौआ, राधेश्याम काकाकेँ हम तीन पुस्तसँ जनै छिऐन।

साधारण किसान गौरी बाबा छला। माने राधेश्याम कक्काक पिता। जहिना सबहक मनमे अपन अपन-अपन अराधक प्रति आराधना होइए तहिना गौरी काका मनमे बेटाकेँ सज्ञान बनबैक आराधना अराधि एम.ए. पास करौलैन। बेटाकेँ पढ़बैत-पढ़बैत बीघा भरि खेतो बिका गेल छेलैन। मनमे आशाक मोटरी बन्हले छेलैन जे बेटा पढ़ि-लिख लेत तँ अपन जिनगी अपना ढंगे जीबैक लूरि-बुधि भइये जेतइ। तइले अनकर आशा थोड़े रहतै। ओ तँ ओतबे काल अछि जेत्तेकाल नइ भेल अछि।"

बजैत-बजैत जीबछ भाय चुप भऽ गेला। अपना बुझि पड़ल जे भरिसक जीबछ भाय किछु बात बिसैर रहला अछि, जनु तेकरे मोन पाड़ैले बीचमे रूकला अछि। बजलौं-

"भाय साहैब, एकबेर आरो चाह पीब?"

चाहक नाओं सुनि जीबछ भाय बजला-

"बौआ, चाहे ने चाह पैदा करैए ओत्ते चाह मनमे बैसले अछि जे कोन रूपेँ तोरा बुझा सकब, सहए ने मन थीर भऽ रहल अछि।"

अपनो मन कनी-मनी अकछाए लगल। बजलौं-

"भाय साहैब, शॉर्ट-कटमे कहियौ।"

जीबछ भाय बजला-

"राधेश्याम काका प्रगतिशील विचारक लोक छैथ, अपना पाँचो बेटाकेँ अपना जकाँ संस्कृत विद्यालयसँ नहि जोड़ि अंग्रेजी विद्यालयसँ जोड़लैन। अपन उठाइन सेहो भेलैन। विद्यालयक उठाइन भेने, परिवारो आ बालो-बच्चाकेँ पढ़बै-लिखबैमे कहियो कोनो अभाव नइ भेलैन। पाँचो बेटामे एकटा डॉक्टर, दूटा इंजीनियर आ दूटा अफसर बनि जहाँ-तहाँ नोकरी करै छैन। पाँच बरख पहिने विद्यालयसँ रिटायर भेला। अपन कीनल जमीन, तइमे

लगौल आमक गाछी, अपन खुनौल दस कट्ठाक पोखैर, तैसंग अपन बनौल दू-मंजिला घर वस्तु-जातसँ सजौनहि छैथ भलैं समाजक बीच सामाजिकता नहियेँ सजौलैन, से छोड़ि बेटाक संग रहैमे असोकर्ज छैन्हे। तँए टिटही जकाँ दुनू परानी रहै छैथ। शरीर घटने रंग-रंगक बिमारीक दाब जहिना पड़ि रहल छैन तहिना करताइतिक अभावे कष्ट सेहो भइये रहल छैन।"

जीबछ भाय जेत्ते बजला तेते तँ अपने नइ बुझल छल मुदा किछु-किछु देखल-सुनल तँ अछिए। मन थकथका गेल जे की बाजूँ।

जीबछ भाय दोहरबैत बजला-

"राधेश्याम काका जे कहला 'बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं', से अपने ने जनबो करता जे भोगबो करता। बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं आकि बुइड़ गेलौं। से तँ अपने मन ने कहैत हेतैन।"



शब्द संख्या : 1086, तिथि : 04 मार्च 2019

धुआ साड़ी

जिनगीक पचपनम बर्खमे आइ कीर्त्तिनाथ स्वाधीन-जिनगीक साँस लेलैन। पाँच बजे भोरक समय, कीर्त्तिनाथक नीन टुटि गेल छेलैन मुदा ओछाइनेपर पड़ल छला। नीन टुटिते अनायास मनमे अपन स्वाधीन-जिनगीक भविसक विचार खसलैन। ओछाइनपर सँ उठला पछाइत जिनका जे जीवन क्रिया सबहक रूप मनमे अबैए, कीर्त्तिनाथकेँ से नइ एलैन, ओछाइनपर पड़ले-पड़ल अखन धरिक जिनगी मनमे धमैक उठलैन। धमैकते मन कहलकैन, 'आइ समाजमे हम ओहन बेकती छी जे समाजकेँ सभ दिन सेवा करैत एलौं, मुदा से केते लोक बुझि रहल छैथ। रंग-बिरंगक लोकक बीच बनल समाज अछि, समाजमे जहिना समाजक एक टुकड़ी लेल नीक सेवा तहिना दोसर लेल नीक कुसेबो भइये जाइए, तैठाम समाजक बीच आड़ि-मेड़ तँ पड़िये जाइए आ मुँह फुल्ला-फुल्लीसँ लऽ कऽ केस-मोकदमा, मारि-पीट, गारि-गरौवैल सेहो होइते रहैए। तँए नीक-बेजाए-क बीच जीबैले मजबूरन लोक बाध्य भइये जाइए..!'

कीर्त्तिनाथक मन समाजक रमझौआसँ आगू बढ़ि अपन भविसक राम-धाम दिस विदा भेलैन। जिनगीक अन्तिम पड़ाव तकक कुघट सीढ़ीक अन्तिम सीढ़ी कीर्त्तिनाथ काल्हि टपि गेला। काल्हि तकक जिनगी जे अनेको छान-बान्हमे पड़ल छेलैन, रसे-रसे ओ सभटा मनसँ पड़ा गेलैन। माने, पैंतीस साल पूर्वमे भेल अगिलग्गी केस[8]क फैसला काल्हि भेल। ओइ केसक जे मुद्दइ छैथ

[8] सेशन केस

ओ एकटा विधवा हरिजन, जनिक उम्र अस्सी बर्खसँ ऊपर छैन। ओना, कीर्त्तिनाथकेँ खाली बुझलेटा छेलैन जे एक खण्ड धुआ साड़ी रंगिया लेत तखन ओ कोर्टमे अपन विचार नकारत। सएह भेबो कएल। ओछाइनेपर पड़ले-पड़ल कीर्त्तिनाथ मनमे रोपि नेने छला जे घरसँ निकलला पछातिक पहिल काज यएह भेल जे रंगियाकेँ पुछबै- 'अपन जे जिनगी गमेलौं से तँ गमेबे केलौं, जे अनको कम रगड़ा नइ देलिऐ मुदा तइसँ भेटल की?'

अपन विचारकेँ कर्मक दिशामे बढ़िते कीर्त्तिनाथक मनमे खुशीक लहर लहैर उठलैन। बदलैत-बदलैत कीर्त्तिनाथक विचार तेना बदलए लगलैन जे अपन जिनगीक हर रूपमे बदलावक झलकी उठए लगलैन।

ओछाइनपर सँ उठि कीर्त्तिनाथ अपन नित्य-कर्म दिस बढ़ैत पत्नीकेँ कहला-

"बहुत काज सभ अछि तँए चाह ओतेकालमे जरूर बना लिअ जेतेकालमे हम मुँह-हाथ धोइत नित्यकर्मसँ निवृत्त हएब।"

ओना, अखन धरि कीर्त्तिनाथकेँ जेहेन प्रेमस्वरुप पत्नीक बेवहार हेबा चाही तइमे कमी जरूर रहलैन, जे बात कीर्त्तिनाथ तहेदिलसँ बुझितो छैथ मुदा ऐगला उलझनक आगू पत्नीक बेवहारकेँ गौण बुझि मनमे दाबि कऽ रखने रहला। एकाएक उगैत समस्याकेँ देखि कीर्त्तिनाथक मन हरहरा कऽ ठमकए लगलैन। एकर कारण भेल जे बाहर निकलैसँ पूर्व सभसँ पहिने परिवार आ परिवारक समस्या आगू अबैए, मुदा तोहूसँ पहिने अपन मन-बुधिक अनुकूल अपन वैचारिक समस्या सेहो रहिते अछि। माने भेल जे कीर्त्तिनाथक मनमे रंगियासँ जे पुछैक विचार छैन तइसँ पहिने पत्नीक जे अखन धरिक बेवहारक कमी आँखिक सोझमे रहलैन,

नजैर तैपर पड़लैन।

पत्नीक बेवहारपर नजैर दौड़बैसँ पहिने कीर्त्तिनाथ अपनापर अपने नजैर नजरौला तँ अपनो दोख ओहिना बुझि पड़लैन जहिना आन-आनमे देखि रहल छला। एकाएक मनमे हरहरा कऽ अखन धरिक सभ किछु हारल-हारल सन बुझि पड़लैन। सभठाम जखन दोखे-दोख अछि, तैठाम दुख बाँटब कि मेटब बाल-बोधक खेल थोड़े छी। तलावक तलावमे आकि धारक मोनिमे बसैबला गोहिक मुँह जहिना गहुआएल रहैए तहिना ने सभठाम सभमे अछिए..!

कीर्त्तिनाथक मनमे अपन जिनगी अपना अनुकूल जीबैक संकल्प जगलैन। तेकर कारण ई भेल जे जइ स्तरसँ समाजकेँ नजैरमे रखि सेवा भावना जगेलौं ओइ स्तरक समाज वैचारिक रूपमे नइ छल। ओना, एहनो होइते अछि जे परती-परात जमीनकेँ खिलतोड़ होइते ओइमे ठेकानोक वा बेठेकानोक जँ कोनो बीआ छीटबै तँ ओ धुधुआ कऽ जनैमते अछि, समाजोक बीच तहिना तँ होइते अछि।

नव जागरणक भोर, कीर्त्तिनाथक छैन्हे तँए अपन जिनगीक मोड़ केतए-केतए छैन आ पत्नीक बीच केतए छैन, ओइ मोड़केँ मोड़ैक की उपाय अछि इत्यादि-इत्यादिपर नजैर दौड़ए लगलैन। जे कीर्त्तिनाथ आजुक पहिल काज रंगियासँ पुछैक विचार मनमे केने छला ओ मनेमे दबा गेलैन आ पत्नीक पैछला जिनगीक बेवहारपर नजैर दौड़ैक उपक्रम करए लगलैन। मुदा पत्नीपर नजैर दौड़बैसँ पहिने कीर्त्तिनाथ अपनापर दौड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे दोख अपनो अछि। पत्नीक मनकेँ कहियो अपना मनमे पूर्णरूपेँण मिलए नहि देलिऐन जइसँ सभ दिन खण्डित रहली। की जानिकऽ नहि मिलए देलिऐन आकि परिस्थितिवश बधो छल..? समाजक बीच फँसल

परिवर्त्तनक रणक्षेत्र, जइमे समाज दू फाँक भऽ दुनूकात ठाढ़ भऽ गेल! तैठाम अपन की दायित्व बनैए? एहेन परिस्थितिमे परिवार अभावग्रस्त हेबे करत, जे पति-पत्नीक मनक दूरी बनबैक मूल कारण सेहो बनबे करत किने। खाएर जे भेल ओ काल्हि धरिक जे परअधीनक जीवनमे छेलौं तँए भेल। आइ स्वाधीन-जिनगीक सीमापर ठाढ़ छी, तँए विचारशील बाट पकैड़ चलैक अछि। अन्हा-गाहींस जँ जिनगीकेँ चलाएब तँ ओ कहियो थीड़ी-थमन नइ हएत।

नव भोरक नव विचारक फुलवारी दिस कीर्त्तिनाथ विदा भेले छैथ तँए अपन पछुआएल जिनगीक हारि-जीतक झोराकेँ कन्हासँ उतारि, नव संकल्पक संग अपन जिनगीकेँ संकल्पित बनबए लगला।

अखन धरि नमहर-नमहर काजक संकल्पकथा कीर्त्तिनाथक मनमे उगडुम करिते छेलैन। परिवारक बीच क्रियाशीलता अनैमे पहिने अपन समैयक क्रियाशीलतासँ जोड़ए पड़ै छइ। कीर्त्तिनाथक मनमे एकाएक उठलैन- ओछाइनसँ उठि पहिल डेगक बीच छी, जहिना पत्नीकेँ चाह बनबैक काजमे बान्हि देलिऐन तहिना अपनो चाह बनबैक समय बुझिते छी, तेतबे समय ने अपनो अपन नित्य कर्मसँ निवृत्त हेबाक भेल। तैबीच जँ अपने मुँह तकैत पत्नीक डेग-डेगकेँ गिनए लगब तखन अपन जिनगीक क्रिया की भेल? खाएर जे भेल से भेल, ओ तँ पति-पत्नियेँक बीचक बात भेल किने, तँए नान्हिटा भेबे कएल। किएक तँ दुनू गोरे मड़बापर बैस आगि-पानि छुबि शपथ खेनहि छी जे दुख-सुख काटि ता-जिनगी संगे रहब। देखिते छी, तीन दिनक संगी जे कोनो रस्ता-बाटक होइए तइमे तँ लोक हेरा-फेरी करि रक्का-टोकी करबे करैए जे 'तूँ चोर ते तूँ चोर' मुदा तइयो–कहितो-कहितो–तँ संग मिलि रस्ता कटिते अछि। ऐठाम तँ सहजे अपन घरक बात भेल। ओना, पत्नियोँ कनसोहवाली

छथिये। कोर्टमे केसक फैसला होइसँ पहिनहि बुझि गेल छेली जे केस हमहीं सभ जीतलौं। माने हमरे पार्टी जीतल। एकर गदगदी मनमे रहबे करैन, जइसँ कोर्ट-कचहरीक हवा-पानिमे पत्नीक विचार फँसले रहैन तँए पतिक आदेशकेँ ओही रूपमे क्रियान्वित केलैन।

चाह पीब कीर्त्तिनाथ जखने घरसँ विदा भेला कि अपन इतिहासक संग पैछला समाजोक इतिहास आँखिक सोझमे एलैन। रंगिया गामक बेटी छी, मात्र दूटा सन्तान भेला पछाइत वेचारी विधवा भऽ गेल। पाँच हाथक हरगर-लमगर देह-दशा छेलइ। बुधिसँ रंगिया ओत्तै छल जेतए जिनगी भरि बकरी चरौनिहार-चरौनिहारिक रहै छइ।

पैंतीस-चालीस बरख पूर्व मिथिलांचलमे जमीन्दारीक जाल-फाँस तोड़ैक जोरदार हवा बहल। जइसँ विचारक संग बेवहारोमे बदलाव आएल। सभ गाममे सभ रंगक जमीन्दारीक जाल-फाँस छेलैहे। ओही जमीनक जालक लड़ाइ गाममे भेल। जमीन्दार दिससँ अगिलग्गी केस ठाढ़ कएल गेल। ठाढ़ करैक उदेस ई छेलै जे समाजक (गामक) ओइ शक्तिकेँ तेना मसैल दिऐ जे समाजक नव रूप दिस आँखि नइ उठतै। पैंतीस आदमीपर अगिल्लगी मुकदमा कएल गेल जइमे रंगियाकेँ खेबो-पीबोक आ खेतो-पथारक लोभ देल गेलइ। बिनु लिखा-पढ़ीक तत्काल किछु जमीन देलो गेलइ। अबूझ रंगिया, अगिलग्गी केसक मुद्दई बनि ठाढ़ भऽ गेली। आइ अगिलग्गी केसक एक दिसक जेतेक कर्त्ता-धर्त्ता माने जमीन्दारसँ लऽ कऽ भाँज-भजैत पुरनिहारक संग केसक सभ गवाहो सभ छल ओ मरि गेल आ तैसंग मुद्दालह दिससँ सेहो पाँच बेकती मरि गेला मुदा बँचल तीस बेकती जे जीबै छैथ ओ तँ अपन ऐतिहासिक रूप देखिये रहल छैथ किने।

अथबल दुआरे सवारियेसँ रंगिया कोर्ट गेल छेली। कोर्टसँ

आबि रंगिया दरबज्जाक एकचारीमे ओछाइनपर पड़ल मृत्युक बाट देखि रहली अछि... ।

कीर्त्तिनाथक मनमे जे प्रश्न छेलैन ओ मनक फुलवारीसँ फलवारीमे केतौ नुका गेलैन। रंगियाकेँ देखिते कीर्त्तिनाथ बजला-

“रंगिया..!”

अपन टुटैत जिनगीक बीच रंगिया कनैत बाजल-

“भैया, तोरे सबहक देल धुआ साड़ी पहिर जाबे जीबै छी ताबे पहिरबो करब आ मरैकाल अहीमे लटपटाएल मरबो करब ।”

कीर्त्तिनाथ रंगियाक मुँह दिस टकटक देखैत रहला ।

❑ *शब्द संख्या : 1132, तिथि : 06 मार्च 2019*

राजरोग

जेठ मासक दस बजेक समय। एक्के-दुइये रस्तापर दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ लोक सभकेँ रामसरूप भाय जाइत देखि रहल छला। अखन धरि बिहड़िया छोटो-छीन हाल[9] नइ भेल छल तँए समयमे तापक तेजपनो बेसी आ तीखपनो-झड़कपन छेलैहे।

रामसरूप भाय अपन खेतमे रामझिमनी तोड़िये रहल छला कि रौदक झड़कसँ मनमे तेना झड़कबाहि उठलैन जे कम्मे काज–रामझिमनी तोड़ब–शेष छेलैन तैयो छोड़ि कऽ ठण्ढाएब नीक बुझि पड़लैन। मुदा ऐ भाग-दौड़क दुनियाँमे जेते काज निपैट जाइए, माने सम्पन्न भेल जाइए ओते भाग-दौड़क रस्तो तँ कमबे करैए, ई सोचि रामसरूप भाय काजकेँ छोड़ि जाइयो नइ चाहै छला। मने-मन विचार केलैन जे जहिना जट्ठर पानिकेँ गर्म होइमे आगिक ताउक संग समैयो बेसी लगैए तहिना जँ किछु समय आमक गाछतर ठण्ढाए लेब तँ पछाइत जे शेष काज सम्पन्न करब ओइसँ मनो ने अकछाएत आ कम्मे समयमे काजो भऽ जाएत।

यएह सोचि रामसरूप भाय खेतक काज छोड़ि रस्ता परहक आमक गाछक निच्चाँमे छहराइले पहुँचला। रस्ताक किनछैरमे आमक गाछक जड़ि अछि मुदा ओ सौंसे रस्ताक–माने रस्ताक चौड़ाइ भरि–अकासोमे पसरल अछि आ निच्चाँमे छाहैरियो करिते अछि।

---

[9] बर्खाक-पानिक

आमक गाछक निच्चाँमे बैसल रामसरूप भाइक मन जेना-जेना जीराए लगलैन तेना-तेना विचारक[10] नव-नव रूप मनमे सेहो उठए-बैसए लगलैन।

जिड़ाइत-जिड़ाइत–ठण्ढाइत-ठण्ढाइत–जखन रामसरूप भाइक मन पानि-पानि भेलैन तखन ऐगला काज–माने रामझिमनी तोड़ब–केँ सम्पन्न करैक विचार एकाएक जोर मारलकैन।

विचारक जोरसँ काजक जोर मने-मन जोड़ाए लगलैन। जोड़ाइत-जोड़ाइत रामसरूप भाइक मन जिनगीक धारमे पहुँच गेलैन। काजेक बाधा जिनगीक बाधा बनि सबहक जिनगीक गतिकेँ बाधित करैए जइसँ ओकर जिनगी राइ-छित्ती होइत राइ-छित्ती भाइये जाइए...। तहीकाल सड़कपर एक्के-दुइये लोककेँ दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ लफड़ल अबैत लोक सभकेँ रामसरूप भाय देखलैन। लोकक चालिसँ रामसरूप भायकेँ बुझि पड़लैन जे ई चालि नियमित चालि नहि, कोनो खास अवस्थाक चालि छी..! मनमे उठलैन जे भरिसक केतौ-किछु भेल हेन तँए लोक देखए जा रहल अछि।

रामसरूप भाइक मनमे आने सभ जकाँ भेलैन जे केकरो पुछि दिऐ जे ‘केतए सभ जा रहल अछि वा अहाँ केतए जाइ छी।’ मुदा लगले अपने मन रोकलकैन जे हो-न-हो जँ कोनो एहेन घटना गाम-समाजमे भेल हुअए, जइ आगू अपन काज[11] महत्-हीन बुझि पड़ए, तखन तँ अपन काज बाधित करइ पड़त। लोको लाज तँ किछु छी। जँ से नइ छी तँ पति-पत्नीक बीचक प्रेमलीला सार्वजनिक जगहपर किए ने होइए। तैसंग मनमे ईहो उठैत रहैन जे जँ दुनियाँक गति-

[10] कार्यगत विचार

[11] रामझिमनी तोड़ब

विधिसँ सम्बन्ध-सरोकार नइ राखब तखन तँ दुनियाँ आगू बढ़ि जाएत आ अपने पाछूमे टिटियाइत रहब।

असमंजसमे पड़ल रामसरूप भाइक मनमे भेलैन जे गाछक निच्चाँमे सड़कपर बैसले छी आ जे कियो जा रहल अछि सबहक मुहसँ अवाज सेहो निकलिये रहल अछि...।

जेना थाकल-ठेहियाएल लोक हवा आ छाँह पेबिते अलिसा जाइए तहिना आँखि बन्न करि साधक जकाँ कानक दरबज्जा खोलि रामसरूप भाय गाछक जड़िक भागमे ओङ्गैठ गेला। तहीकाल टिटही आ कोइलीकेँ गप-सप्प करैत आभास पौलैन। आँखि खोलि देखबो केला। दुनू गोरे रस्ता टपि रहल छेली। ओना, टिटहियो आ कोइलियो दुनू गोरेक उपनाम छिऐन। असल नाओं छिऐन- तेतरी आ मधुरिया।

प्रेमी-प्रेमिकाक बात थोड़े छी जे कियो फुसराहैट करत। गामक बात छी तँए अपन-अपन जीवन्त आचार-विचारक हिसाबे बजबे करत। टिटही टाँहि दैत बजली-

“बहिन, लोको अखज होइए..! कहू जे पनरह दिन पहिनहि सुनलौं जे राघोकाका अस्पतालेमे मरि गेला आ आइ सुनलौं हेन जे निरोग भऽ कऽ एला हेन।”

तीन मास पहिनहि राघोकाका पटना अस्पतालमे भर्ती भेल छला, के-ने-के हवामे उड़िया देलक जे राघोकाका इलाजेक दौड़मे मरि गेला।

सामंजस करैत कोइली बाजल-

“बहिन! लोककेँ मरैत तँ देखलिऐ हेन मुदा मरल लोककेँ जीबैत नइ देखने छेलौं, से तँ कम-सँ-कम देखि लेब किने।”

गप-सप्प करैत दुनू–टिटही-कोइली–आगू बढ़ि गेल, जइसँ

रामसरूप भाइक मनक पह फटलैन। राघोकाका ऐठाम सभ जा रहल अछि, से स्पष्ट भऽ गेलैन।

गाछक छाहैरसँ उठि रामसरूप भाय मने-मन विचारलैन जे अखन देखबैयाक ढबाहि लगले अछि, हाँइ-हाँइ कऽ अपन काज सम्हारि पाछू-पाछू चलि जाएब। यएह ने बेसी-सँ-बेसी हएत जे पाछू जाएब तँ पैछला बात सुनब, मुदा एक्के-दुइयेक मुहसँ तँ सेहो ने एक्के-दुइये पैछला बात निकलबो करबे करत।

राघोकाका सुभ्यस्त परिवारक छैथ। ओना, सुभ्यस्तक अनेको रूप अछि, जेना पढ़ल-लिखल सुभ्यस्त, धन-सम्पैतिक सुभ्यस्त, समांगक सुभ्यस्त इत्यादि-इत्यादि। मुदा ऐठाम से नहि, राघोकाका धन-सम्पैतिक सुभ्यस्त लोक छैथ। ओना, धनोक सुभ्यस्त-परिवार दू रंगक सेहो होइते अछि। पहिल श्रम-सँ-श्रमित धनक सुभ्यस्त आ दोसर होइए बिनु-श्रम-सँ-श्रमित सम्पैतिक सुभ्यस्त। राघो कक्काक सम्पैत बिनु-श्रमित छेलैन। नोकर-चाकरक बीच राघो कक्काक जीवन शुरू भेलैन। नोकरी करैक रहैन नहि, तँए पढ़ैमे बेसी मेहनतक बेगरतो नहियेँ छेलैन। बैसारीक जिनगी, तँए बैसारी काज दिस राघोकाका झुकला। खाइ-पीबैक कमी कहियो ने भेलैन। पिताक परोछ भेला पछाइत जखन राघोकाकाकेँ अपना ऊपर भार पड़लैन तखन एक-एक करि पिताक देल सम्पैत टुटए लगलैन। टुटैत-टुटैत ओतेक टुटि गेलैन जे भीख मंगैक नौबत राघोकाकाकेँ बनि गेलैन।

ओना, दू रंगक गुण अखनो राघोकाकामे छैन्हे। पहिल, सभ साजो बजबैक (पुरान साज, जेना- हारमोनियम, तबला इत्यादि) आ चित्रकलाक ज्ञान सेहो भरपूर छैन्हे। सभ दिसक दरबारी ठाठ-बाठ रहने केतौ जाइक जरूरत नहि रहलैन, जइसँ अछैते गुणे निर्गुन बनि गेला...। तही बीच उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ अगिलबहान भाय पास

करैत रहैथ।

ओना, रामसरुपो भाय आँखि ताकि चुकल छला मुदा काज करै दिस बढ़ल नहि छला। अगिलबहानक माने रघुवीर भाय, अगिलबहान गाममे लोक अही दुआरे रघुवीर भायकेँ कहै छैन जे गामक कोनो घटनाक समाचारकेँ ओ अपन विचारानुकूल प्रचारित-प्रसारित करै छैथ। भगत भगतैक जे रूप हुअए मुदा अगिलबहान भाय ओकरा सामाजिक नजैरसँ देखै छैथ, जइसँ समाजक समरूप सदिकाल हिनक ठोरपर रहिते छैन। रामसरूप भाय सेहो बुझै छैथ जे अगिलबहान भायसँ सभ बात गहराइसँ बुझि लेब। ..रामसरूप भाय बजला-

"भायजी, किमहर-किमहर टहैल रहल छी?"

कहबियो छै जे गाए-गौरुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान, तहिना भेल। रामसरुपो भायकेँ लोकक ढबाहिक बात बुझब छेलैन आ दोसर दिस अगिलबहानो भायकेँ अधिक-सँ-अधिक लोक तक विचार पहुँचाएब छैन्हे।

रामसरूप भाइक विचारक नाँगैर पकैड़ अगिलबहान भाय बजला- "किमहर-किमहर की टहलब जे गामे लोकक तेहेन चकरचालि[12] देखै छी जे अछैते औरुदे सभ मरैले करमान लगल अछि।"

अगिलबहान भाइक विचार रामसरूप भाय नीक जकाँ नहि बुझि पेला तँए अपनाकेँ संयमित करैत बजला- "से की, भाय साहैब?"

दिलखोलि अगिलबहान भाय बजला- "बौआ, हम ओहो दिन राघो कक्काक देखने छिऐन, जखन रण्डी नचबै छला आ ईहो दिन

[12] कएल जिनगी

देखलौं जे बेटा सभकेँ ने स्कूल देखा सकला आ ने सेवे कऽ सकला। बचकानीए उमेरमे ओ सभ दिल्ली धऽ लेलकैन। रोडक काज–सड़क बनबैक काज–सँ जीवन शुरू केलक। कम कमाइ तँए कम्मे रुपैआ घर पठबै।"

बिच्चेमे रामसरूप भाइक मुहसँ निकललैन- "बाह बेटा..!"

अगिलबहान भाय विचारकेँ मोड़ैत बजला- "औझुके बेटा ने काल्हि बापो होइए, राघोकाका की भेला?"

प्रश्न भारी बुझि पड़लैन आकि की अगिलबहान भाइक ऐगला विचार बुझै दुआरे, रामसरूप भाय बकर-बकर मुँह देखैत चुपे रहला। अगिलबहान भाय बजला- "कियो-ने-कियो राघोकाकाकेँ कहि देलकैन जे बेटा सभ तेते कमाइए जे फ्लैट कीनत। यएह गरमी हुनका मनमे तेना उठि गेलैन जे पहिलुका सभ केलहा-खेलहा मोन पड़ि गेलैन।"

अगिलबहान भाइक मुँहक बात 'केलहा-खेलहा' सुनि रामसरूप भाय बिच्चेमे टोकि देलखिन- "से की भाय साहैब?"

अगिलबहान भाय मुस्की मारि मुस्कियाइत रामसरूप भाय दिस नजैर गड़ा मुस्की मारए लगला।

रामसरूप भाय टोकलैन- "भाय साहैब, अपने गुड़-चाउर खाइ छी आ हमरा सुदामा जकाँ सुखलो चाउर नहि!"

जहिना कोनो विचार वा काजकेँ जड़ि-मूलक बोध बनाएबे ओकर रस लेब होइए तहिना रसिक बनि अगिलबहान भाय बजला-

"तीन मास पहिने राघोकाका ओछाइनेपर पड़ल खूब जोर-जोरसँ कानए लगला। दिल्लीसँ दुनू बेटा आबि पटना लऽ गेलैन। पाँच घन्टा धरि लगातार परीक्षणक पछाइत डॉक्टर बुझि गेला जे शारीरिक रोग तँ तेहेन नइ छैन मुदा मानसिक रूपेँ जवानी डिरिआइ

छैन।”

‘जवानी डिरिआइ छैन’ सुनि रामसरूप भाय बिच्चेमे टोकैत बजला-

“जवानी डिरिआएब की भेल?”

रामसरूप भायकेँ बुझबैत अगिलबहान भाय बजला-

“अखन दोसर बात चालबह तँ पहिलुका तर पड़ि जाएत। तँए सरकारी ऑफिसक फाइल जकाँ नहि करह, अखन राघो कक्काक बात सुनह।...डॉक्टर जवाब देलकैन जे अहाँकेँ कोनो रोग नहि अछि। अपने बाजू जे की सभ होइए।”

तैपर राघोकाका कहलखिन-

“डाक्टर सहाएब, पचीस बरख पहिने एकटा डाक्टर कहि देने छेला जे अहाँकेँ राजरोग भऽ गेल अछि, तँए पथ्य-पानि ठीक राखब।”

राघो कक्काक बात डॉक्टर साहैब बुझि गेला। बजला-

“तीन मासक बेडरेस्टो आ बेडफूडोक ओरियान करि दइ छी।”

आशा हारि आकि आशा जीत राघोकाका बजला-

“बड़बढ़ियाँ।”

वएह तीन मासपर पटनासँ गाम एला अछि।



शब्द संख्या : 1274, तिथि : 10 मार्च 2019

संकल्प

कोनो अविकसित वा अर्द्धविकसित देशो आ गाम-समाजक संग परिवारो आ बेकतियोक बीच बेरोजगारियो आ पछुपनो रहिते अछि। अपनो समाज आ देशोमे अछिए। कियो जानि-बुझि एहेन परिस्थितियो आ परिवेशोक सामना करैत अपन जीवनकेँ संचालित करै छैथ आ कियो कखनो अपनो, कखनो परिवारोकेँ आ कखनो देशो-दुनियाँकेँ दोख लगा मन शान्त करिते छैथ। विचारपुर गाममे रामलाल एहने एक किसान परिवारक बेकती छैथ जे सइयो समस्या, सइयो छान-वान आ खगल बेर-बेगरताक बीच अपनाकेँ ठाढ़ केने डेगे-डेग ससैर रहल छैथ। जहिना एक दिस रामलाल अनेको बेर-बेगरताक अभावमे खगल जिनगीक गाड़ी खिंच रहल छैथ तहिना विचारक दुनियाँमे ईहो जानि-मानि रहल छैथ जे जइ देशमे उपजाऊ भूमि-सम्पदाक बाहुल्य अछि तइ देशक किसानमे ओहन अपरिमित शक्ति सेहो अछिए जे किसानी जिनगीकेँ जिनगीक रूपमे जीवाइये सकैए।

रस्तेकातमे रामलालक अँगनो-घर छैन आ दरबज्जा तँ सहजे रस्ते कातमे, रस्तेक रूखिये सेहो छैन्हे। जइसँ जेते अपन दुआर-दरबज्जाक लज्जैत बनौने छैथ तेते रस्तोक बनौनहि छैथ। ओना, गामक केतेको लोक ई उपराग दइते छैन जे जेते फुलक गाछ रामलाल अपन दरबज्जापर नइ लगौने छैथ तइसँ बेसी रस्तापर–सार्वजनिक भूमिमे–रोपने छैथ। मुदा तइ सभ बातकेँ रामलाल ने

कहियो कान-बात देलैन आ ने बाते कानमे धेलैन। किएक तँ अपनो मन कहिते छैन जे फुलक गाछ भलेँ हम रोपने छी मुदा देवी-देवताक पूजा करैले आनो-अपन अपने रोपल जकाँ तोड़ियो कऽ आ बीछियो कऽ लइये जाइ छैथ, तइले हम किनको मनाहियो तँ नहियेँ करै छिऐन। तखन ओ सबहक भेल आकि हमरेटा...।

आइ ओही रस्ता परहक फुलक गाछक जड़िकेँ निहारि-निहारि रामलाल देखि रहल छला जे हालक[13] अभावमे एना भेल कि कोनो कीड़ाक आगमन भेलै जे एना दिनो-दिन गाछक बढ़बारिक बदला घटबाहि भेल जा रहल अछि...। गाछक जड़िकेँ खोदि कऽ देखि रामलाल मुड़ी उठा मने-मन विचारए लगला कि रस्तापर एक गोरेकेँ अबैत देखलैन।

अनगौंआँ रहने रामलाल चिन्ह नहि सकला। ओना, मनुक्ख तँ मनुक्खे भेला जे एकरूपिया देवियो-देवताकेँ चीन्हब कठिन अछिए। किएक तँ करवन देवी दुर्गा बनि जेती आकि लछमिये-सरस्वती, से जानब तँ कठिन अछिए।

मनक विकारकेँ रामलाल विचारि-विचारि सुविचार बनबैले मन ओरियेबिते छला कि ओ आदमी आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। रामलाल चीन्हि नहि सकला। ओना, करवनो-करवनो चिन्हारो अनचिन्हार भइये जाइए, मुदा अनगौंआँ तँ सहजे अनचिन्हार जगहक भेबे केलाह तँए अनचिन्हार सोभाविके...। दरबज्जाक आगूक रस्ताक विचार करैत रामलाल जखन पाछू उनैट ओइ आदमी दिस तकलैन तँ किछुओ परेखमे नहि एलैन जे ओ पीड़ित अवस्थामे छैथ आकि बेपीड़ित अवस्थामे। तैबीच अपन संक्षिप्त परिचय दैत ओ बेकती अपने बजला- “हम बगले गाम रहै छी,

[13] नमीक

किसुनलाल नाम भेल।”

परिचय सुनि रामलाल विचार कइये नहि पेब रहल छला जे किसुनलाल ऐठाम आबि रूकि कऽ चुपचाप ठाढ़ किए भेला। गाछक जड़िक जँ जानकार रहितैथ तँ किछु विचार दइतैथ, नहि जँ किछु जानए चाहितैथ तँ सेहो किछु बजितैथ मुदा से दुनूमे सँ किछु ने..!

अपनाकेँ सम्हारि रामलाल बजला-

“चलू, दरबज्जापर।”

‘दरबज्जापर चलू’ कहैत रामलाल उठि कऽ ठाढ़ भेला। रामलालकेँ ठाढ़ होइते किसुनलाल बजला-

“किछु संकल्पक संग हम घरसँ निकलल छी, तँए..!”

‘संकल्पक संग घरसँ निकलल छी’ सुनिते रामलालक मन, अकासमे उड़ैत नमहर चिड़ै जकाँ चकभौर लेलकैन। संकल्पक विकल्प तँ दुनू दिस अछि। केहेन विकल्प, केहेन संकल्पवान बनबैक दिशामे बढ़ौत आ केहेन संकल्पक समाधानक केहेन विकल्प हएत? असमंजसमे पड़ल रामलाल पुन: बजला-

“जेतेकाल ऐठाम रूकि गप करब तेतेकाल किए ने दरबज्जेपर बैस गप-सप्प करब?”

ओना, नव पीढ़िक पढ़ल-लिखल किसुनलाल तँए मनमे उठि चुकल छेलैन जे सार्वजनिक पथ–माने गामक रस्ता–पर मान-अपमानक प्रश्न नहि रहैए ओ तँ अधिकार-कर्तव्यक बीच बास करैए। मुदा दरबज्जा तँ से नहि, ओ तँ बेकती-विशेषक भऽ जाइए। ओना, दरबज्जाक सेहो सार्वजनिको रूप अछि आ बेकती-विशेषक सेहो अछिए। खाएर जे अछि तइसँ रामेलाल आकि किसुनेलालकेँ कोन मतलब छैन। भाय किछु छी, मनुक्ख तँ छीहे किने। जँ

मनुक्ख विचारक आदान-प्रदान नइ करता तखन तँ मनुक्खक आकार रूप भऽ सकता मुदा मानव मानब तँ कठिन भइये जाएत।

एकाएक किसुनलालक मनमे पाइनिक बेग जकाँ विचारक बेग उठलैन। उठलैन ई जे आन जीव-जन्तु अपन सुख-दुखकेँ भोगि सकैए मुदा केकरो कहि तँ नइ सकैए। ओना, कहब जे अधिकसँ अधिक दुखकेँ अपने-आपमे अङ्गेजब महानता भेल, मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम बस एतबे जे जाबे अपन दुख आन लग नइ बाजब ताबे जँ ओ सुखदातो होथि तँ बुझता केना जे हमरा चलैत दोसरकेँ एते कष्ट भऽ रहल छैन...।

किसुनलाल सहर्ष बजला-

“भाय साहैब! अपनो पियास लगल अछि, चलू एक गिलास पानियोँ पीब।”

किसुनलालकेँ अगुएने रामलाल दरबज्जापर पहुँच चौकीपर बैसबैत बजला-

“अहाँ बैसू, हम पानि नेने अबै छी।”

आँगन दिस रूखि करिते रामलालक मनमे उठलैन जे ई तँ मिथिला छी। ऐठाम अतिथि-अभ्यागतक सेवा जहिना अनिवार्ये नहि धरमो मानल जाइत अछि तहिना निमाहबो तँ कठिन अछिए। हमरा हाथक पानि हाथमे लइसँ पहिने जँ किसुनलाल बाजि जाथि जे केहेन पियास बुझबैक पानि छी, तखन तँ कठिन परीक्षाक घड़ी आबिये जाएत..! भाय, परिस्थिति केहनो किए ने हुअए मुदा मनुक्खो तँ रगड़ी होइते छैथ किने, किछु-ने-किछु समाधानक बाट ताकिये लइ छैथ, भलेँ ओ सुफाँइट हुअए कि कुफाँइट।

रामलाल मन सक्कत केलैन। पानि नेने दरबज्जापर किसुनलाल लग आबि बजला- “पहिने किछु अन्न ग्रहण करितौं

तेकर पछाइत जँ पानि पीबितौं तँ बेसी नीक होएत।”

अन-पानिपर किसुनलालक मन नइ रीझल मुदा अपन मनक संकल्प अपने विचारकेँ फोड़ैत निकलल-

“आने-आन पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल युवक जकाँ हमहूँ पढ़ल-लिखल युवक छी। बी.ए. केलाक सात बरख भऽ गेल, नोकरीक पाछू वौआइत रहलौं। आइ घरसँ संकल्पित भऽ कऽ निकलल छी जे चाहे जे काज हुअए, बिना अपनौने घुमब नहि।”

एक तँ नोकरीक संकल्प, तोहूमे घर छोड़ि घुड़मुड़िया..! रामलालक मन बिहुसलैन। बिहुसते बजला-

“संकल्प तँ सक्कत अछि मुदा अछि भरिसक नरकक ठेलम-ठेल जकाँ..!”

रामलाल बजला एतबे, मुदा मनमे ईहो बात रहैन जे एक तँ परतंत्रक जिनगी अङ्गेजब, सेहो लाखक-लाख घूस दऽ कऽ।

ओना, किसुनलालक चेहरा भीतरसँ जहिना चमैक रहल छेलैन तहिना बाहरसँ दमैकियो रहले छेलैन। चमकै-दमकैक कारण किसुनलालक मनमे ई छेलैन जे जहिना अपन जिनगीक बुड़ैत नैयाक नाह देखै छला तहिना संकल्पित जिनगीक कटिवद्धता सेहो छेलैन्हे।

तैबीच रामलालक पत्नी–सुकन्या–चाह नेने पहुँचली। सुकन्याकेँ देखि किसुनलालक छाती दड़कए लगलैन। पत्नीक संग जीवन-यापनक की पैघ-पैघ अरमान मनमे छल आ आइ की भऽ रहल अछि..! मुदा अपन पीड़ा पीड़ितसँ जरिते किसुनलालक मनसँ नोकरीक संकल्पक बुलबुला, बरखाकालक पानिक बुलबुला जकाँ धीरे-धीरे फुटि-फुटि पानिमे विलीन हुअ लगलैन आ जिनगी जीबैक संकल्प मनमे उठए लगलैन जइसँ दुनू गोरेक बीच चुपा-चुपी पसैर

गेलैन।

चुपा-चुपी देखि रामलालक मन कछमछेलैन। बजला-

“पहिने चाह पीबू, पछाइत जे टुट-नफाक गप अछि ओ होइत रहत।”

अदहा कप चाह किसुनलाल पीब नेने छला मुदा रामलाल अतिथि आग्रह देखि चौथाइयोसँ कम्मे चाह पीने रहैथ। तैबीच किसुनलाल बजला-

“ऐगला जिनगी-ले..?”

बिच्चेमे किसुनलालक बोली थकथका गेलैन। थकथकाएबो सोभविके छल, की तँ सात बर्खसँ धाँगल-टुटल जिनगीक ने भुक्तभोगी रहि चुकल छैथ।

थकमकाइत-धकमकाइत किसुनलालकेँ देखि रामलाल बजला-

“अखन अहाँ नवयुवक छी! ओना, किछु समय बीचक जरूर नष्ट भऽ गेल मुदा जखने जागी तखने परात।”

‘जखने जागी तखने परात’ सुनि किसुनलालक मन सुगबुगेलैन। सुगबुगाइक कारण भेलैन जे एक तँ पढ़ल-लिखल नौजवान, दोसर सात बर्खसँ देश-समाजक बाढ़िक थपेड़सँ नीक जकाँ थपड़ा सेहो गेले छला जइसँ मनुक्खक चतुर्दिक जिनगीक रूप-रंग सेहो बहुत किछु अनुभव कराइये देने रहैन। सुगबुगाइत किसुनलालक मनमे सभसँ बेसी गाम-घरक खेतिहर किसानक जिनगी जोर मारलकैन। खेतिहर किसानक वृत्ति किसुनलालक मनमे अबिते अपने फुटलैन-

“वाह रे खेतिहर किसान! एक दिस पढ़ि-लिखि खेतीकेँ

हँसियापर बैसा छोड़ि-छोड़ि परतंत्रक नोकरी पाछू बेहाल छैथ आ दोसर दिस कृषि-वृत्तिकेँ स्वतंत्र जिनगीक इज्जत-धर्म सेहो मानियेँ रहल छैथ..!”

किसुनलालक विचार सुनि रामलालक मनमे विचारक सुप्रभात झलकी देलकैन। मुदा विचारो-विचारक बीच जे खाँच अछि ओकरा समतल बनबैमे किछु कठिनाइयो आ बाधा सेहो अछिए। तँए विचारक जड़ि दिस रामलालक मन बढ़िये रहल छेलैन कि दोहरी बाट नजैरपर चढ़लैन। बजला- “किसुनलालजी, मनुक्खकेँ सभसँ पहिने अपन ओकातिक अनुभव करक चाही, पछाइत ओइपर जिनगी केना ठाढ़ हएत तइ दिस नजैर बढ़ेबाक चाही। जखने से हएत तखने मनुक्खकेँ कोनो-ने-कोनो रस्ता भेटबे करत।”

रामलालक विचार किसुनलाल नीक जकाँ नहि बुझि पेला मुदा एहेन तँ आशा मनमे रहबे करैन जे जँ नीक विचार एक बेरे नहि बुझी तँ दोहराइयो-तेहराइयो कऽ बुझैक कोशिश जरूर करी। जखने मनक विचार सोझरा जाएत तखने हाथ-पैरक काज सेहो रस्ता पकड़बे करत... ।

मुँह फोड़ि किसुनलाल बजला- “नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।”

कोनो विचार जखन अपन विचाररूपमे चलैए आ राही-बटोहीक बीच ओझल हुअ लगैए तखन एक नहि अनेको उदाहरणसँ जहिना ओकरा फरिछाएल जाइ छै तहिना रामलाल बजला- “अपना ऐठाम समर्पणक विचार खाली[14] विचार नहि जिनगी जीबैक मूल तत्त्व सेहो छी। तँए अपनाकेँ... ।”

किसुनलाल- “की समर्पण?”

---

[14] सिर्फ

ओना, शॉर्ट-कटमे रामलाल बाजि गेला जे 'अपनाकेँ अपने-आपमे समर्पण' मुदा किसुनलालक चेहराक सुर्खीमे कोनो सुखपन नहि अबैत देखि रामलाल फरिछबैत पुछलखिन-

"अपन बपौती सम्पैत की सभ अछि?"

ओना, सात बरख पहिने तक किसुनलाल 'बपौती सम्पैतिक' अर्थ खाली खेते-पथार आ धने-सम्पैतटा केँ बुझै छला, मुदा सात बर्खक जिनगीक हिलकोरसँ विचारोमे थोड़ेक हिलकोर आबिये रहल छैन जइसँ बपौती सम्पैतिक माने खाली जमीने-जायदादटा नहि, पारिवारिक-सामाजिक सम्बन्धक संग बेकतीगत जवाबदेही सेहो जुड़ल अछि, से किछु-किछु बुझिमे आबए लगलैन। तँए किसुनलाल धकमकाइत बजला-

"बपौती सम्पैत तँ केतेको रंगक अछि।"

किसुनलालक विचार रामलाल बुझि गेला। तँए लगले हाथ फरिछबैत बजला-

"अखन जइ तरहक समस्या बेरोजगारीक अछि मात्र ओतबेपर विचार करू। अपना केते खेत-पथार अछि?"

किसुनलाल बजला-

"पाँच बीघा।"

रामलाल-

"भैयारी केते छी?"

किसुनलाल-

"दू भाँइक भैयारी अछि।"

रामलाल-

"अपन देश कहियौ कि राज्य आकि गामे कहियौ, खेतक कुल

सम्पदा आ लोकक कुल सम्पदाकेँ एकठाम हिसाब जोड़ियो तँ... ।”

किसुनलालक मन विचारक घाटसँ जेना लगले असनान करिकऽ निकलल होनि, तहिना पवित्र सेहो भइये गेल छेलैन। मुदा अन्तक अन्तिम बात जे अपना विचारसँ नोकरीक संकल्प लऽ कऽ निकलल छला आ रस्तामे कियो वौस कऽ घुमेनिहारो ने होनि सेहो केहेन हएत... ।

किसुनलाल बजला-

“आब की करी?”

रामलाल-

“गामक रस्ता पकड़ू ।”

किसुनलाल-

“सहए ।”

रामलाल-

“हँ तँ आरो की... ।”



शब्द संख्या : 1520, तिथि : 12 मार्च 2019

एकटा नमहर दुख मेटा गेल

सूर्य अस्त भऽ गेल रहै मुदा अन्हार नहि भेल छल। गहुमक खेत देखि बाध दिससँ घुमि घरपर अबैत रही। मन तीताएल जकाँ रहए। तीताइक कारण छल जे बहुत मेहनतसँ गहुमक खेती केने छेलौं जे बुड़ि गेल। कहब जे जेते मेहनतक जरूरी गहुमक खेतीमे होइए, सएह ने भेल हएत। ओ तँ सामान्य भेल, बहुत केना भेल? मुदा बात किछु आरो अछि...।

आन गृहस्त जकाँ ने अपन घरक बीआ बाउग केने छेलों आ ने आन जकाँ कुभाँज खादे देने छेलिऐ। माने अन्नागाहींस खादक प्रयोग नइ केने छेलौं, समुचित ढंगसँ जहिना तीनू खाद–नाइट्रोजन, फस्फेट आ पोटाश–क उपयोग केने छेलौं तहिना समुचित ढंगसँ बीआ सेहो देने छेलिऐ। तैंसग आरो-आरो जे सोलहो पौष्टिक तत्त्व खेतीक लेल अनिवार्य अछि, सेहो सभ समुचित ढंगसँ उपयोग केने छेलौं।

गहुम फुटि कऽ निछार भऽ गेल, मुदा जे बँचल अछि बस तेतबे। बाधमे मूसक बाढ़ि आबि गेल अछि। कारण, दू सालसँ बाढ़ि नहि एने मूसक बढ़बाड़ि तेते भऽ गेल अछि जे बारह कट्ठाक कोलामे मात्र गोटे कट्ठाक उपज हाथ लगत, बाँकीकेँ मूस तेना खरैर कऽ काटि नष्ट कऽ देने अछि जे लाभक उपजाक कोन गप जे लागतोमे डाँड़े लागत। मुदा उपाइये की? खाएर.., एना अपनेटा नहि भेल, गामक प्राय: सभ गृहस्तकेँ भेलैन–जे सभ गहुमक खेती

केने छैथ। माने सबहक एक्केरंग गति...। ओना, सबहक खेतीक दशा देखि करखनो-करखनो मनक तीनपन कनी-मनी कमो हुअए, किए तँ 'दसक काज हार-जीतक कोनो ने लाज', मुदा जखन आन गृहस्त नजैरसँ हटि जाथि आ अपन खर्च-बर्चक संग मेहनत मोन पड़ि जाइए कि एकाएक तीतसँ तीतेबे करैए। गुन-धुन करैत घरपर अबैत रही कि सुगिया माइक नजैर हमरापर पड़लैन कि दरबज्जेपर सँ बजली-

"रघुनी बौआ, चाह पीब लिअ तखन जाएब।"

मनमे गहुमक डुमल चास नाचिये रहल छल, तइ बिच्चेमे सुगिया माए चाह पीबैक आग्रह केली। रस्तापरसँ सहैट कऽ सुगिया माइक दरबज्जापर एलौं।

तिरपन-चौबन बर्खक सुगिया माइक उत्साहक दप-दप चेहरासँ बेहद खुशी छिटैक रहल छेलैन। अपन मन तीताएले छल मुदा तैयो मनकेँ मन बुझबैत कहलक, 'कियो केकरो दुखकेँ हेरि थोड़े लइए, बेसीसँ बेसी बाँटि सकैए। तइले अपन दुख माने गहुक खेतीक नोकसान कियो बाँटि थोड़े लेत। तखन जँ अनेरे मन घोघचेने रहब से नीक नहि।' उत्सित विचार मनकेँ उत्साहित केलक।

ओना, गामक अधिक-अधिक उमरदारसँ लऽ कऽ कमो उमरबला सभ सुगिया माएकेँ 'सुगिये माए' कहै छैन मुदा हम 'भौजी' कहै छिऐन। तेकर कारण अछि सामाजिक सरोकार। ओना, हमहूँ सभ दिन सभकाल भौजीए कहै छिऐन सेहो बात नहियेँ अछि, 'सुगिया माए' सेहो कहै छिऐन। फगुआमे रंग खेलेबाकाल आ जुड़शीतलमे थाल खेलेबाकाल अरवैध कऽ 'भौजी' कहिते छिऐन, मुदा आन समयमे जखन जेहेन मन खनहन-खरहर

रहल तरवन से कहै छिऐन...।

अपन मनक पीड़ाकेँ सुगिया माइक सुखक सुखपनसँ प्रीति जोड़ि बजलौं-

“भौजी, अहाँ बहुत दिन जीब। ओना, जीब अहाँ मुदा खुशी हमरे बेसी हएत।”

बिना नाकर-नुकर[15] केने सुगिया माए बजली-

“से केना?”

बजलौं-

“गाम-समाजमे जँ भाए-भौजाइक इलाका बेसी रहल तँ बेसी नीक, नहि जँ एकोटा रहल तैयो हँसी-खुशीसँ दिन कटिते अछि।”

तैबीच सुगिया माइक जेठकी पुतोहु चाह नेने दरबज्जापर पहुँच सुगिया माइक आगूमे रखि चोट्टे आँगन दिस घुमली। बिच्चेमे सुगिया माए बजली-

“बौआ, लोहा मिसिलक पाट-पुरजा जकाँ सभ परानी मिलि परिवारक एकटा नहमर दुखक बेरा ऐबेर पार केलौं।”

ओना, पुतोहु आगू बढ़ैत गेली मुदा सासुक विचारकेँ असीरवाद सरूप बुझली। जेना-पियासलकेँ पानि देखि पानिक आकर्षण बढ़ैए तहिना छअ घन्टा मेहनत केलाक पछाइत नहा कऽ दरबज्जापर सुगिया माए एबे केली कि हमरापर नजैर पड़ल छेलैन, तँए चाह पीबैक तृसना[16] उग्र भऽ गेल छेलैन। हाँइ-हाँइ कऽ तीन-चारि घोंट चाह सुगिया माए पीब लेली। जइसँ मनक जल-थम्हन सेहो भइये गेल छेलैन। बजली- “बौआ, दस बर्खसँ जे तबाही

---

[15] तर्क-वितर्क

[16] तृष्णा

होइत आबि रहल छल ओ तबाहीक बेरा ऐबेर हँसी-खुशीसँ पार केलौं।"

ओना, विचारक दौड़मे सुगिया माइक विचारक झलक मनमे आबि गेल, मुदा तबाहीक भाँज बुझले ने छल, तँए की बजितौं। एतबे बजलौं-

"से की?"

सुगिया माए दिल खोलि बजली-

"बौआ, जड़ियेसँ कहै छी। किए तँ जहिना हम बुढ़ भेलौं तहिना आब ओहूँ ने भेलिऐ। मरै-जीबैक कोनो ठेकान अछि।"

भौजीक विचारकेँ जँ दिअर धारक दियर जकाँ विचारक धारमे स्थान नहि दिअए, ओहो केहेन हएत! तँए मुड़ी डोलबैत बजलौं-

"से तँ ठेकान नहियेँ अछि।"

मध्ययुगीन रचनाकार जकाँ सुगिया माए 'नख-शिख'क वर्णन नहि करैत 'शिख-नख'क वर्णन शुरू करैत बजली-

"बौआ, सभ दिनसँ अहूँ देखैत एलौं हेन जे तीन-चारिटा गाए खुट्टापर रहैए। पैछला साल बीस हजार रुपैआक गहुमक भुस्सी कीनने छेलौं तखनो दिके-सिके पार लागल।"

ऐगला बात तँ बुझल नहि छल मुदा तैयो बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ से तँ कीननहि छल हएब।"

ओना, हमरा पुछक चाही जे पैछला सालक पैछला गप की भेल आ ऐबेर केना पार लागत, मुदा भौजी बाढ़िक धारमे भँसिया गेलौं। खाएर.., भौजी रच्छ रखली। ओ हमरा संगे नइ भँसियेली अपन दियर धेनहि बजली- "बौआ, गाम-घरसँ माल-जाल तँ

उपैटिये गेल अछि, हमरे सन-सन गोटि-पङ्गरा गिरहस्त माल पोसने छैथ, जइसँ मालक चाराक खपत कमने जहाँ-तहाँ नष्ट भऽ रहल अछि। दोसर दिस सुखल चारामे जहिना गहुमक भुस्सी तहिना नारक कुट्टी।”

बजलौं-

“हँ, से तँ भेबे कएल।”

सुगिया माए बजली-

“बौआ, गाम-घरमे टाट-फरकक घर कमने नारो-पातक उगार भेबे कएल अछि। केतए-कहाँक भुस्सी जे गाम अबै छल ओहो ऐबेर रूकि जाएत। गाममे नारक उगार भेने सस्ता भेल। तैसंग इंजनबला कुट्टी-कट्टा मशीन आबि गेने एते दुख तँ मेटेबे कएल जे बीस हजारक काज ऐबेर डेढ़ हजारमे भेल अछि।”

एक तँ साल भरिक मालक भोजनक जोगार तैपर साढ़े अठारह हजारक बचत भेने सुगिया माइक मनक चपचपी किछु बेसी रहबे करैन। देहक दोहारा हार-काठक लोक सुगिया माए, तैपर दूध-दहीक लाट सभ दिन रहने उमेरो हेराएले जकाँ छैन आ वएस[17] सेहो झँपाएले छैन। जहिना जुआनीमे जइ दुलकीसँ छाउर-गोबरक छिट्टा माथपर नेने खेत जाइतो छेली आ घुमितो छेली से देखल अछिए, बिसरब केना। ओहन दुलकी काजक अभ्यास रहने सुगिया माइक ओ रूप अखनो ओहिना छैन जहिना जवनकी वएसमे छेलैन।

सुगिया माइक चपचपीमे जँ छोट-छीन सुखल गोलो फेकितौं तँ ओ लगले ओइ चपचपीमे चपि कऽ चपाइये जाइत, तँए मनकेँ

---

[17] जिनगीक खाड़ीक अवस्था।

मनाही करैत बजलौं-

"साढ़े अठारह हजारक बँचत आइक जुगमे कोन मोलक भेल।"

बेवहारिक जिनगीक धाँगल सुगिया माए, तँए पाइक मोल सेहो बुझिते छेली। बजली-

"बौआ, जइ आमदनी-ले बीस हजारक काज छल ओ डेढ़ हजारमे आबि गेल, जइसँ काजक बढ़बारि आबिये गेल किने। आब जँ केतबो काजकेँ बढ़बए चाहब तँ पूजीक अभाव हएत!"

ओना, सुगिया माए अपन धारक पेटे-पेट बहि रहल छेली मुदा अपन जिनगी तँ अपने जिनगी जकाँ अछि तँए गोटे-गोटे बात बुझबो केलौं आ बेसी नहियेँ बुझलौं। मुदा तैयो जी-जाँति बजलौं-

"भौजी, गामक सभ अहाँकेँ सुगिये माए कहैए से किए?"

हमर प्रश्नकेँ सुगिया माए सोल्होअना अपन डायरीमे नोट केलैन। ओना, मुँह उठा-उठा हमरा दिस तकबो करिते छेली। जे कोनो आरो बात ने तँ छुटि गेल छैन। अपना जनैत हमहूँ सुगिया माइक जड़ियेक बात पुछने छेलिऐन।

शिखसँ उतैर सुगिया माए नरवे दिससँ शुरू करैत। बजली-

"बौआ, अरवन जेहेन हमर देह-दशा अछि तइसँ नीक बच्चामे छल। मुदा बुइध तोहूसँ बेसी मोटाएल छल।"

टोकारा दैत बजलौं-

"सुआइत अहाँकेँ अरवनो छटपटी लगले रहैए..!"

अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत सुगिया माए बजली-

"बौआ, बापक हम बड़ दुलारू बेटी छेलिऐन। खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ जे जे काज ओ करै छला तइमे संग-साथ दइ छेलिऐन।

ओहो गाइये पोसै छला। गाइयक पोसमे कोनो भारी काजो ओहन नहियेँ होइत।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“हँ से तँ नहियेँ अछि।”

जेना अपन नामकेँ प्रमाणित करैले गजेटेड अफसरक साइन जरूरी होइत तहिना भरिसक हमरो साइनिक खगता सुगिया माएकेँ पड़लैन। बजली-

“बौआ, लोक हमरा ‘सुगिया माए’ कहै छैथ मुदा दुनू बेटाक नाओं कियो ने जोड़ै छैथ से किए? ओना, हमरा कोनो तइसँ मान-रोख नहियेँ अछि। जेहने बेटा तेहने बेटी, तहूमे जेठ सन्तान।”

सह पबिते बजलौं-

“एकरा के काटत।”

सुगिया माए फुटैत बजली-

“बौआ, एकबेर गामक लोकक संगे जनकपुर मेला गेलौं। ताबे सुगियाक जनम भऽ गेल रहइ। दोसर सन्तान नहि भेल छल। तेते लोकक करमान मेलामे लगल रहै जे गामक संगीक जेरसँ हेरा गेलौं।”

‘हेराएलो लोक भेटैए’, सुनि हँसी लगि गेल। बजलौं-

“केते दिनक पछाइत गाम घुमि कऽ एलौं?”

सुगिया माए-

“ता डेढ़े बर्खक सुगिया छल, अपने तँ तीन दिन तक पानियेँ पीब रहलौं मुदा पेट-ले केकरोसँ किछु मंगलिऐ नहि। जइसँ अपन दूधे सुखि गेल, सुगिया-ले दूध मरि गेल! भीख मांगि ओकरा जीयौने छी। तँए सभ ‘सुगिया माए’ कहैए।”

सुगियाक भाँज लगिते बजलौं-

“जखन मोटगर-डटगर बुधि तहियेसँ रहए तखन केते गोरेसँ ढुसि लेलौं?”

गम्भीर सुगिया माए, हमर बातकेँ अनसून करैत बजली-

“बौआ, जहिना बापक सेवा केलौं तहिना ओहो गाए-पोसैक सभ लूरि अपना सोझमे देखा-सुना सन्तोखसँ मुइला आ तहिना... ।”



शब्द संख्या : 1349, तिथि : 15 मार्च 2019

काजक मोल

बैशाख मास। करीब चारि बजे बेरुपहरमे रामलोचन बससँ उतैर घर लग पहुँचले छला कि आगू दिससँ पढ़ुआ काकाकेँ अबैत देखलैन। घरक आगूक रस्तेपर रूकि अभिवादन करैत रामलोचन बजला- “गोड़ लगै छी, काका।”

‘गोड़ लगै छी काका’ तेकर असिरवादी उत्तर पढ़ुआ काका देलखिन आकि अपन मनक अनुकूल देलखिन से पढ़ुआ काका जानैथ मुदा बजला यएह- “काजक मोल ने ते गमबै छह!”

पढ़ुआ काकाकेँ जहिना समाजक लोक तहिना रामलोचन सेहो बुझिते छैन जे पढ़ुआ काका अपन मनक लोक छैथ तँए अपना ढंगक बोलियो-वाणी आ कामो-धाम छैन्हे। अपना मनक लोक पढ़ुआ काकाकेँ सभकियो ऐ दुआरे कहै छैन जे अपनो मुहेँ कतादिन बजला हेन जे ‘शास्त्र-पुराण एकोटा झूठ नहि अछि, जीवन्त बातक विचार सभ केने अछि।’ जखन हमहींटा नहि संसारक सभ कियो बुझै छी जे जिनगी कखन खूस-दे चलि जाएत तेकर ठेकान नहि, माने भेल जे जिनगीकेँ नगदा-नगदी लेन-देन करैत चलू जइसँ मनमे शंके ने रहत जे जखन केकरो एक पाइ करजा लऽ कऽ नइ मरब तखन मुइला पछाइत जे नरकक मुँहपर कियो ढेका पकैड़ खिंचत जे ‘तूँ कर्जखौक छह तँए तोरा नरकक बास हेतह!’ तेकरा हमहूँ ने मुहेँपर कहबै जे ‘तूँ झूठ बजै छह, नरकक बासक कारणो ने देखेबह... ।’

पढ़ुआ काका अपन मन-मतलबक लोक छैथ, अपना

विचारक अनुकूल बाजल छला। जिनगीक जे क्रिया अछि ओकरा ओ काजेक रूपमे बुझि काजे कहै छैथ। ओना, ऐठाम ईहो अछि जे जहिना काजक रूप अनन्त अछि तहिना काजक रंगो अनन्त अछिए। मुदा से बुझनिहारक लेल। पढ़ुआ काका जहिना पढ़ैक समय निर्धारित केने छैथ जे सरस्वतीक चालिमे पड़ि लक्ष्मीक चालि बिसरब नीक नहि, तँए शब्दक अभावक कारणे पढ़ुआ काका काजे-शब्दक प्रयोग केलैन। ओना, पढ़ुआ कक्काक नगदा-नगदी, माने वर्त्तमानक बीर्तमान जिनगीक मतलब यएह छैन जे ने केकरो पैछला किछु खेने छिऐ जे से बाँकी अछि आ ने ऐगला किछु खेबै जे सएह बाँकी रहत। ऐठाम लेन-देनक माने खाली चीजे-वस्तुक लेन-देनटा नहि, विचारोक आदान-प्रदान अछि। जँ केकरो हमर किछु बात मनमे उपजल वा बाँकी होइ से कहि दिअ आ हमरो जे बात केकरो कहैक अछि से हमहूँ ठाँहि-पठाँहि मुहेँपर कहबै। अनेरे जे मनक उपजल विचारक बात मनेमे गुमसड़ाएब से नीक नहि। ओना, कहि सकै छी जे सभ बात सभठाम बाजब उचितो नहि आ वर्जितो अछि, सेहो अपना जगहपर नीके अछि। मुदा ओकरो तँ ओ ने नीक जगह भेल जे जगहानुकूल होइ, मुदा जे जगहानुकूल नइ अछि ओ..? जेना, आम खाइ छी जइमे एकटा आँठी होइ छै आ कहि दिऐ जे 'लताममे बहुत बीआ होइ छै तँए सक्कत लगैए', एहेन विचार जगहानुकूल नइ भेल, मुदा जँ आम खाइकाल आमक ऑँठीक चर्च करै छी तँ ओ अनुकूल भेबे कएल किने...।

अही तरहक विचारमे पढ़ुआ काकाकेँ बिसवासो छैन आ श्रद्धापूर्वक ओकरा निमाहबो करिते छैथ।

आजुक जेहेन परिवेश–पढ़ै-लिखैक–बनल जा रहल अछि ओ एहेन बनल जा रहल अछि जइसँ एक-दोसराक बीचक सम्बन्धक दूरी प्रतिकूल दिशानुमुख भेल जा रहल अछि। अपना ऐठामक जे

वैचारिक धाराक धरातल रहल–ऐठाम वैचारिकक चर्च अछि तँए सोल्होअना बेवहारिक नहि मानल जा सकैत–अछि ओ एहेन रहल अछि जे एक-दोसराक सम्बन्धक दूरी अनुकूल दिशामे रहलो अछि आ अखनो अछिए। जँ से नइ अछि तँ किए गाम-समाजमे अखनो आनो-आनकेँ बाबा, दादी, काका, काकी, भैया, भौजी इत्यादि शब्दक प्रयोगो होइए आ किछु बेवहारिक सेहो अछिए। बेवहारिक रूपमे एक्के-दुइये नहि, प्राय: सभ-केँ-सभ मानवीय सम्बन्ध आ मानवीय विचारक बात बुझितो छैथ आ आनो-आनकेँ बुझैबतो छथिए, खाएर जे जेतए अछि से तेतए रहअ, ओइसँ पढ़ुआ काकाकेँ कोन मललब छैन।

तहीकाल हमहूँ ओही रस्ते पार करैत रही। एक दिस जहिना रामलोचनकेँ दहिना हाथमे बैग नेने ठकठकाएल ठाढ़ देखलयैन तहिना दोसर दिस पढ़ुआ काकाकेँ सेहो देखलयैन। किछु बुझैक विचारसँ मकमका कऽ अपनो ठाढ़ भेलौं। ओना, रामलोचनक विषयमे नीक जकाँ नहि बुझै छी, किए तँ ओ पटनामे पढ़ितो छैथ आ ओत्तै रहितो छैथ, मुदा पढ़ुआ काका तँ गाममे रहनिहार गामक लोक छैथ, तँए करवनो-ने-करवनो भेँटो भइये जाइ छैथ। तैसंग सोलहन्नी एकरंगा लोक सेहो छथिए तँए कोनो काजे वा विचारेकेँ तेना कटकटा कऽ पकड़ै छैथ जे निर्णय (फल) तक पहुँचा, 'हँ' वा 'नहि', 'नीक' वा 'अधला'क सीमा तक पहुँचाइये दइ छथिन...। तँए, रामलोचनकेँ किछु नहि कहि पढ़ुआ काकाकेँ कहलयैन- "काका, बड़ निचेन देखै छी?"

जेना बिढ़नी काटल लोक छटपटाइत रहैए तहिना पढ़ुआ काकाकेँ काजक छटपटी लगले रहै छैन, यएह सोचि बाजल छेलौं। जेकर जवाब दैत ओंघाएल जकाँ पढ़ुआ काका बजला- "निचेने छी! भाय जेकर दुनियाँ छिऐ, जइले ओ हाय-हाय करैए, लिअ

अपन दुनियाँ! हमरा कोन मतलब अछि। खाली हाथ एलौं खाली हाथ जाएब।”

पढ़ुआ कक्काक बातक कोनो भाँजे ने लगल जे की कहलयैन आ की कहला। मुदा से धाँइ-दे बजितौं केना? ओकर तँ सूत्र अछि जे खाली पढ़ुआ काकाकेँ टोकलासँ भेट जाइए। ओ तँ अपने तेहेन टोकनगर लोक छैथ जे टोकैत-टोकैत रहड़िक बुट्टी जकाँ सिर धरि निकालि देता। टोकारा दैत बजलौं- “हँ काका, से की कोनो चोराएल बात कहै छिऐ।”

ओना, पढ़ुआ कक्काक मन आजुक जे सामाजिक सरोकार बनल जा रहल अछि, जेकर असर सोझा-सोझी जिनगीपर जे पड़ि रहल अछि जइसँ जिनगीक सभ किछु–सभ्यता संस्कृति–प्रभावित जे भेल जा रहल अछि तइ दिस रामलोचनक नजैर ढुकल वा नहि से जानए चाहै छला। जेकरा ओ काज शब्दक रूपमे प्रयोग केने रहैथ। ओना, हुनकर नजैर ओहू दिस छेलैन जे जिनगीक दू धाराक धारमे एक किनार–माने एक छोर–जँ श्रमहीनक अछि तँ दोसर किनारक छोर श्रमशीलक सेहो अछिए। अही बीच ने जिनगीक धार बहैए। तइ दिशामे रामलोचनक नजैर उठल अछि वा नहि...।

अपन मन बदलल। बदलल ई जे पढ़ुआ काका जखन सभ दिन भेँट होइते छैथ तखन बिनु भेँट भेनिहारकेँ कुशलो-छेम नहि पुछि, हिनकेसँ–माने पढ़ुए काकासँ–गप-सप्प करैत रही सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। तँए, रामलोचन दिस उनैट कऽ बजलौं- “बौआ, अपन की हाल-चाल अछि?”

जहिना सबालो सबाल छी, तहिना जवाबो तँ जवाब छीहे। मोटो होइए आ मेही सेहो तँ होइते अछि। जहिना अपने बजलौं, तहिना रामलोचन बजला- “सभ नीके अछि।”

‘सभ नीके अछि’ सुनि अपन बकारे बन्न भऽ गेल। जखन

सभ नीके अछि तखन अनेरे अधला विचार करबे ने नकारात्मक सोच भेल। एतबो परहेजी तँ अपनाकेँ बनाबी... । ओना, रामलोचन बाघक मुँहपर पड़ि गेल छला, किए तँ पढ़ुआ कक्काक काजक अर्थ रामलोचनकेँ शिकारि रहल छेलैन। शिकारि ई रहल छेलैन जे पढ़बकेँ कियो पढ़ब बुझै छैथ आ कियो अध्ययन बुझै छैथ इत्यादि-इत्यादि अनेको रूप रंगमे बुझै छैथ, मुदा तँए पढ़बकेँ काज बुझनिहार लोक नहि छैथ सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

मुदा रच्छ रहल, पढ़ुआ काकाकेँ कोनो अगुताएल काज जनु मोन पड़ि गेलैन, एकाएक आगू बढ़ैत रामलोचनकेँ पुछलखिन- "बौआ, कहिया तक गाममे रहबह?"

रामलोचन- "काका, एलौं ने अपना विचारे मुदा जाएब तँ अहीं सबहक विचारे ने।"

'अहीं सबहक विचारे जाएब' सुनि पढ़ुआ कक्काक मन जेना झुकलैन। झुकिते हमरा दिस तकैत बजला- "रमेश, सौंझुका चाह रामलोचने ऐठाम पीब।"

खरङ्गाह लोक लगमे तँ खरङ्गाहे जकाँ ने बाजब नीक, तँए बजलौं- "सौंझुका माने की? हम महींस दूहि लेब तेकर पछाइतिक समय देब।"

'ठीक छै' कहैत पढ़ुआ काका बजला- "तोहीं हमरा संग करबह।"



शब्द संख्या : 1090, तिथि : 16 मार्च 2019

एतए बसव कठिन अछि

पान-सात दिनसँ गुरुकाका भेँट नहि भेल छला। ओना, बिनु बुझनौं एते तँ बुझिते छी जे गुरुकाका नीके-ना अपन रामधुनिक धुन्नी लगा अपना धुनिमे लगल रहिते छैथ। जँ से नहि तँ कोनो एहेन समाचारो सुनबामे नहियेँ आएल अछि जे गुरुकाकाकेँ किछु भऽ गेलैन। हँ, कहियोकाल बजैक झाँइ चढ़ि जाइ छैन, से बुझले अछि जे एना आइये नहि तहियेसँ आबि रहल छैन जहियासँ मनमे एलैन। ओना, उड़न्ती समाचार सुनबे केने छेलौं जे पान-सात दिनसँ मन-मियाद[18] उनटल रहै छैन, मुदा तहूमे कोनो अप्रिय घटना नहियेँ सुनलौं। तथापि अपन मनकेँ केतबो थतमारि राखए चाहलौं मुदा से नहियेँ मानलक। घीच-तीड़ कऽ गुरु कक्काक ऐठाम लइये अनलक।

गुरुकाका जहिना समयानुसार सभ दिन अपन झूठ-फूसमे लागल रहै छैथ तहिना लगल छैथ। ऐठाम झूठ-फूसक माने झूठ-फूस नहि, घरक छोट-सँ-छोट काजमे लागल रहब अछि। दरबज्जापर पहुँचते कनडेरिये आँखिये गुरुकाकाकेँ हिया कऽ देखलौं जे अखन गुरु कक्काक वृत्ति केहेन चित्र गढ़ैत रहल छैन। मुदा से भेल नहि, गुरु कक्काक जहिना श्वास क्रिया तेज छैन तहिना चक्षुक क्रिया सेहो तेज छैन्हे। जेते अंगक क्रियामे तेजी रहत ओही अनुकूल ने मनक मननो-माननो आ मानबो-मानब बनल रहत। दरबज्जाक ओसारक निच्चेमे रही कि गुरुकाका चाँइ जकाँ बजला- “किसुन,

---

[18] मनक मियाद

तोरे हम तकै छेलियह..!”

अपना सभमे तँ सभ दिनसँ एहेन विचार बास केनहि अछि जे केकरो मन नइ दुखाबी, तहूमे गुरु कक्काक मनकेँ। फेर मनमे भेल जे ई नै ने कहलैन जे ‘तोरा दुआरे हमर कोनो काज बिथुत भऽ गेल!’ तँए जहिना रही तहिना रहैत आत्मज्ञानी जकाँ बजलौं-

“गुरुकाका! हमर अपनो ब्रह्म कहै छल जे पान-सात दिनसँ भेँट नइ भेला हेन गुरुकाका। तँए भेँट करब जरूरी अछिए।”

हमर विचार जेना गुरुकाकाकेँ पचलैन तहिना पुछलैन-

“अपना दिसक की हाल-चाल छह?”

जखन अपन हाल-चाल पुछलैन तँ झूठ नहि बाजब। तोहूमे गुरुकाका लग झूठ बजने तँ स्वर्गक कोन गप जे नरकोमे ठेलम-ठेल हएत..! बजलौं- “काका, की हाल-चाल रहत। सबै नचाबे राम गोसाँई..! कियो ब्रह्म राम बनि ब्रह्मानन्दमे लीन रहै छैथ जइसँ ब्रह्ममय दुनियाँ देखै छैथ तँ कियो बजितो अछि आ करितो तँ अछिए जे ‘जे राम से राम, जान लेबइ कि देबइ।”

रामायणिक प्रेमी गुरुकाका छथिए, हमर व्याख्यासँ रसेला आकि रामायणिक पाँतिसँ, से तँ गुरुए-कका जनता, मुदा मुँहक चुहचुहीसँ लऽ कऽ मनक चुहचुही धरि चहचहा उठलैन मुदा बजला किछु नहि, झूमए लगला। तेना झूमए लगला जे मुँह फुस-फुसा गेलैन-

“केशव कही न जाए किछु कहिये। देखब तब रचना विचित्र, समुझ मने-मन रहिये...। केशव कही न जाए...।”

गुरु कक्काक रूप देखि अपने मन झुझुआए लगल जे अनेरे लोकक मुहेँ उड़न्ती बात सुनि मनकेँ दुखबै छेलौं जे गुरु कक्काक मन चढ़ल रहै छैन। ओना, पान-सात दिनसँ भेँट नहि भेल छला तँए

मोनसँ भेँट भेबे केलाह जइसँ कोनो-ने-कोनो घाट भेटबे करत। एहेन जिज्ञासा मनमे छेलए-हे। तैपर देखिते गुरुकाका कहलैन- 'तोरे तकै छेलियह!' किए हमरा तकै छला? एहनो तँ सम्भव अछिए जे कोनो काज बिथुत भऽ गेल होइन। मुदा एते तँ अपनो बुझले अछि जे गपक वाणकेँ गप नहियोँ रोकि सकैए–माने विचारक वाणकेँ–आ रोकियो तँ सकिते अछि। ओ निर्भर करैए सुनिहारपर, मुदा काजकेँ तँ काज रोकिये सकैए...। बहाना ठाढ़ करैत बजलौं- "काका, की कहब! तेहेन समय आबि गेल अछि जे बापो-बेटाक[19] भेँट छह मास-साल भरिपर होइए, मुदा एहनेमे ने अपनो जिनगीक सभ किछु चलाएब अछि। बिमारीक चक्करमे पड़ि गेल छेलौं तँए भेँट नइ भेल छेलौं।"

जिनगीक लेल बिमारीक महत्-केँ अपन 'बिथुत काज'क संग आँकि कऽ गुरुकाका विचारलैन आकि की से गुरुकाका जनता मुदा मनक मियादि जरूर पसिझ गेलैन। गुरुकाका बजला- "किसुन, आब हमर बास ऐठाम कठिन अछि।"

अपना मने गुरुकाका जे बाजल होथि मुदा हम अपना मने अपने बुझि बजलौं-

"ऐठाम बसव कठिन अछि तँ दुनियाँमे हल्लुक केतए अछि?"

हृदयवेधी वाण जकाँ हमर बोल गुरुकाकाकेँ लगलैन आकि अपने मनक बम फुटलैन से तँ गुरुए-कका जनता, मुदा बजला एतबे- "किसुन, जखन परिवारेक बेवहार-विचार दुषित हुअ लगैए तखन ओही परिवारजनक दायित्व बनैए जे ओइ दुषितपनसँ अपनाकेँ साकांच करी।"

---

[19] छोट बच्चाक

ओना, अखन तक गुरुकाका अपन मनक पूर्ण भरास नहि निकालने छला तँए बजैमे धकमकाइते छला मुदा गपक संग विचार-रसक रस्सीकेँ पकैड़ बजलौं- “उचिते किने..!”

उचित-अनुचितक विचार सेहो लोक अपना-अपना मने करिते अछि, गुरुकाका सेहो केनहि हेता...। अपन मनक भरास निकालैत बजला- “किसुन, लोककेँ बुझि पड़ै छै जे हमरे उनटौने दुनियाँ उनैट जाएत आ रामहिलोरापर चढ़ल जकाँ बुझैए जे अकासमे ठेक जाएब।”

इशारे-इशारामे गुरुकाका नाचि रहल छला, मुदा अपनो तँ बुझल अछिए जे गुरुकाका ओहन शिकारी छैथ जे मूसक वंश केना बाघक वंशमे पहुँच गेल आ बाघक वंश केना मूस बनि गेल, दुनू बात बुझै छैथ तँए उटपटांगो बाजब नीक नहियेँ होएत। बजलौं- “केना साकांच परिवार बनत, गुरुकाका?”

बजैत-बजैत मन रोकि देलक जे भने गुरुकाका अपने बाजल छला जे ‘बसव कठिन अछि।’ गुरुकाका तँ गुरुए-कका ने भेला, अपन गड़ूकेँ अपने खोलता। से खोललैन- “किसुन, जहिना विचारपर सदिकाल चोट पड़ि रहल अछि तहिना परिवारोक सभ बतकहल जकाँ भेल जा रहल अछि..!”

ओना, बजैसँ गुरुकाका मनकेँ चेतलैन आकि मने मनकेँ चेतौलकैन से गुरुकाका जानैथ। बजला- “किसुन, आब गाममे एकोदिन बसव कठिन अछि। मन होइए गामेसँ चलि जाइ।”

गर भेटल। गर ई भेटल जे गुरुकाका केता दिन बाजल छला जे जेतए बसी सएह सुन्दर देश भेल। तेकरा छोड़ि जँ गुरुकाका अपने भागैले तैयार भऽ गेला, तखन मुँह बन्न राखब उचित नहि। बजलौं- “काका, दुनियाँकेँ हेरै-हरबै पाछू सभ हरान अछि मुदा

तइसँ नइ ने हएत, जखने जीता-जीती हुअ लगत तखने गाँधीजी जकाँ दोसर दोसराक आगू कान देबइ।"

हमर बात जेना गुरुकाकाकेँ नीक लगलैन तहिना मनक फुल-फुली जगलैन। बजला- "किसुन, जिनगीक दू पाटक फाट बनल अछि। एक वैचारिक आ दोसर बेवहारिक। अही दुनूक बीच सभ उगडुम कऽ रहला अछि।"

गुरु कक्काक बात नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, तेकर माने ई नइ जे गुरुकाकाका झूठ बजला। तेकर माने ई जे अपने अखन तक विचारो आ विचारक बेवहारक दूरियो ने बुझै छेलौं। फेर मनमे भेल जे बीचमे टोक-टाक केने विचारकेँ ओंघराइक सम्भावना सेहो बनि सकैए, तँए बाजबकेँ अनुचित बुझि मुँह बन्ने रखलौं।

जेना पतिआनी पूर भेलापर पूर्ण विराम देल जाइए तहिना अपन विचारपर पूर्ण विराम दैत गुरुकाका बजला-

"किसुन, जिनगीक वैचारिक स्तरक संग बेवहारिक स्तर सेहो अछि, मुदा ओइ बीचक जिनगीक लेल अपन बेवहारिक जिनगीकेँ कटिया-काट काटि अपन जिनगीक संग जोड़ि ली। वएह भेल अपन जीवनसंगी, जेकर कर्त्ता अपने स्वयं छिऐ।"

एकसूरे गुरुकाका बाजि रहल छला मुदा अपने किछु-किछु बुझबो करै छेलौं आ बाँकी साढ़े-बाइसो होइते छल। बजलौं-

"काका, अखन धड़फड़ीमे छी, काल्हि निचेनसँ आएब।"



शब्द संख्या : 1010, तिथि : 19 मार्च 2019

स्वनिर्मित जिनगी

जिनगीक दू छोरक बीच बैसल यात्री जकाँ जगरनाथ काका सेहो अपनाकेँ बुझिते छैथ। जिनगीक दू छोरमे पहिल जहिना माटिमे गाड़ल अछि तहिना दोसर सेहो ओकरे[20] पछाड़ि अपनाकेँ गछाड़ि, गाछ जकाँ ठाढ़े अछि। ऐ मानेमे जगरनाथ काका निरविकार लोक समाजमे मानल जाइ छैथ। हिनक अपन चालियो-ढालि आ किरियो-कलापक चित्र करखनो विचित्र नहि होइ छैन। तँए सदिकाल मनमे एहेन विचार जगले रहै छैन जे दुनियाँमे रही आकि नइ रही, मुदा दुनियाँ जखन अपन हिसाब मांगत तँ ओकरो पाक-साफ कइये देबइ। दुनियाँक हिसाबे केतेक अछि। बस एतबे ने जे हम दुनियाँसँ की लेलिऐ आ की अपने दुनियाँकेँ देलिऐ। तीनियेँ तरहक ने कारोबार दुनियाँक लोक करैए- पहिल, दुनियासँ की लेलिऐ माने दुनियाँ हमरा की देलक, दोसर- की दुनियासँ लेलिऐ आ की अपने दुनियाँकेँ देलिऐ। माने बेसी लेलिऐ आकि बेसी देलिऐ। तेसर, दुनियाँकेँ की देलिऐ...। ओना, कहब जे जखन दुनियाँमे जन्म लेलौं, दुनियाँक बीच रहलौं तखन जँ दुनियाँक नइ रहलै, सेहो सम्भव नहियेँ अछि। मुदा से नहि, जगरनाथ काकाकेँ अपन पालल-पोसल जहिना जिनगी छैन तहिना पलित-फलित अपन विचारो छैन्हे। अपन विचारसँ जगरनाथ काका यएह मानि रहल

---

[20] पहिलकेँ

छैथ जे दुनियाँ जहिना सबहक छी आ सभ मिला कऽ जहिना दुनियाँ अछि तहिना हमहूँ छी आ हमरो दुनियाँ अछिए। ओकरो माने दुनियोँक अपन हिसाब छइ। अपन हिसाब छै जे अहाँकेँ केते दुनियाँ देलक आ केते अहाँ लेलिऐ। किए तँ समाजमे जहिना लेन-देन केतए तक कर्जक श्रेणीमे अबैए आ केतए तक कर्जक श्रेणीसँ बाहर अछि माने ओ कर्ज लेब नहि भेल, से खाली अर्थेक[21] सम्बन्धटा मे नहि अछि, तहिना जीवनोमे अछिए। जेना, ओतए तकक अनुचित कार्यकेँ अनुचितक ओइ कोटिक श्रेणीसँ निच्चाँ ने राखल जाइए जे अपराधक कोटिक श्रेणीसँ निच्चाँ अछि। खाएर जे अछि एते तँ प्रमाणित अछिए जे जहिना माण्डवी ऋृषि जखन यमराज लग पहुँच अपन बारह बरख पूर्वक घटना–टिकुलीकेँ नाँगैरमे कटकी भोंकि अकासमे उड़ा देने छला–स्वयं कबूल केलो पछाइत अपनाकेँ अपराधी नहि मानलैन। तहिना ने सभ-ले दुनियाँ अछि। तँए ओकरा[22] देखि कऽ अपन हिस्साक हिसाबपर नजैर राखए पड़त किने।

पचास सालक जिनगी पार केलाक पछाइत, पचासक माने ई अछि जे साए बर्खक अपन अधारित जिनगीकेँ आधार मानि अदहा पार केलाक पछाइत, असगरे जगरनाथ काका दरबज्जापर बैसल छला। तीन-चारि बजे बेरुका समय छेलइ, सुर्ज ढलानपर पहुँच गेल छला जइसँ रौदमे सेहो शीतपनक संग मीठपन आबिये गेल छल।

बदलैत काजक परिवेश देखि सुचिता काकी, दरबज्जापर पहुँच नजैर उठा जगरनाथ काकापर देलैन।

कोनो विचारमे विचरण करैत जगरनाथ काकाकेँ बदलैत

[21] सम्पैतियेक

[22] दुनियाँकेँ

परिवेशपर नजैर पड़लैन। बदलैत परिवेश, बदलैत परिवेशक माने भेल संक्रमित समय। मुदा ओ कोन रूपेँ संक्रमित अछि तैपर तँ नजैर राखए पड़त...। विचार मग्न जगरनाथ कक्काक मनक मुनि विचरण करैत जीवनक वृक्ष मुनि लग पहुँच गेलैन। वृक्ष मुनि वएह भेला जे वंशधर छैथ। ऐठाम एहेन धोखा ने हुअए जे केहेन वंश, वंशोक तँ अनेक रूपो अछि आ रंगो तँ अछिए। ओना, वृक्ष मुनिकेँ मनमे अटूट बिसवास छैन्हे जे जँ वंशधर नइ रहब तँ दुनियाँ मेटा देत। लोक भलेँ रातिकेँ सुतनमा समय बुझह, अपन मन छै, अपन मियादि छै, जे मन फुरै से करह। मुदा तँए दुनियाँक सभ किछु सुति रहैए सेहो बात नहियेँ अछि। ऐठाम हम रौतुका चोरक चर्च नहि करै छी। किएक तँ ओकरा सुतलेहेक संग बेसी सुतरै छइ।

मनवृक्षक दूटा डारिपर बैसल हंसराज आ वंशराज अछि। हंसराज हँसैत वंशराजकेँ कहलक- "भैया हौ, सुनलिअ जे कहाँ-दन तूँ भीख मंगै छह?"

ओना, हंसराजक बात सुनि वंशराज कने घबड़ेबो कएल आ कनी तमतमेबो कएल मुदा दालि-भात जकाँ विचारकेँ सानैत बाजल- "बौआ, कहाँ, कहाँ बौआ!"

हंसराज बाजल- "भैया! तूँ जेठ छह तँए तोरा लग बजैमे हमरा कोनो धड़ी-धोखा नइ अछि।"

हंसराजक बात सुनि वंशराजक मन जहिना पिनपिनाएल तहिना पनपनेबो कएल। मुदा संयमित रहैत बाजल- "बौआ, कहाँ केतौ भीख मांगए गेल छेलौं, काल्हि कनी मैयाक दरबार गेल छेलौं।"

हंसराज- "अपन करनी मैयाकेँ की सभ कहलुहुन आ अपन भरनी की सभ मंगलुहुन?"

हंसराजक मुहसँ सुनल- ‘करनी-भरनी’क बातसँ वंशराजक मन ठमकल। ठमकैक कारण भेलै जे एकाएक नरकक फोटो मोन पड़ि गेलइ। नर्कक फोटोमे रंग-बिरंगक करनीक भरनी देखौल गेल अछि जइमे झूठ बजैक सेहो छइ। तँए वंशराज धकमकाएल। झूठकेँ सत् बनबैत वंशराज बाजल- “बौआ, जहिना सभ मैयाक दरबारमे पहुँच बजै छैथ जे हम अपराधी छी, पापी छी, अपने तँ दाता छिऐ। तैसंग पापो निवारक आ अपराधो निवारक तँ छिऐहे। जहिना सभकेँ धन, जन, मन, सेर-सम्पैत दइ छिऐन तहिना हमरो दिअ।”

हंसराजक मनक मणि फुटल। फुटिते बाजल- “भैया हौ, जहिना बिना किछु केने सोल्होअना अपराधियो आ पापियो अपनाकेँ मानलह तहिना ने सोल्होअना बिनु केलहे मंगलहुन।”

हंसराजक बात सुनि वंशराजक मुँह अपने बन्न नहि भेल। विचारक बिचड़ैत वाण लगलासँ तेना सकपका गेल जे बकारे हरण भऽ गेलइ।

दरबज्जापर बैसल जगरनाथ काका सेहो अपन जिनगीक वृक्षकेँ हिया-हिया हियासि-हियासि देखिये रहल छला कि सुचिता काकी चाह नेने पहुँचलैन।

सुचिता काकीक हाथमे चाह देखि जगरनाथ कक्काक मनक पियासमे थोड़ेक तृप्ति जरूर एलैन मुदा लगले ईहो आबि गेलैन जे पत्नीक उपारजित[23] चाह पीबैसँ पहिने हुनकर चाहोकेँ ऑंकब तँ जरूरी अछिए। मुदा अपन मनक-विचारक धारकेँ तत्क्षण अवरोध करब नीक नहि बुझि बाहरी धाराकेँ मनमे नहि धड़ैत पत्नीक हाथमे चाह देखि जगरनाथ काका बजला- “जहिना अपना मनमे चाहक

[23] उपअर्जित

पियास छल तहिना अहाँक चाहो आ चाहक रंगो तँ रंगोलीए जकाँ अछि।”

ओना, जगरनाथ कक्काक मनधारकेँ सुचिता काकी नीक जकाँ बुझिते छैथ। किएक तँ कोनो धार किमहर मुहेँ बहैए आ किमहर मुहेँ घुमि जाएत, एहेन-एहेन जिनगीक भकमोड़ सभ सुचिता काकी जगरनाथ कक्काक मुहेँ केतादिन सुनि चुकल छेली। तहूमे ई बात आँखिक देखलो छैन्हे जे जखन दुनू परानी कोनार्कक सूर्य मन्दिरक संग समुद्रक कातमे कबीरक गाड़ल खन्ती देखि कऽ घुमल छेली आ कलकत्ता देखैक विचारसँ हबड़ा स्टेशनपर उतैर कलकत्तामे रूकली तखन एहनो धार (हुगली) तँ देखनहि छेली जे सोलह घन्टा उत्तरसँ दच्छिन आ आठ घन्टा दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ बहिते अछि। जइसँ मन मानि गेल छेलैन जे एको धार दू-मुहाँ होइते अछि। तँए, अपन विचारकेँ सुचिता काकी अपना मनेमे स्थापित करैत बजली- “अनेरे दुनियाँक कोन जालमे मनकेँ वौआबै छी, आब जिनगीए केते बाँकी (उमेरक हिसाबे) अछि जे तइले एना मनकेँ मारि रहल छी।”

सुचिता काकीक विचार सुनि जगरनाथ काका बजला- “ओना, बहुत रास बात विचार करैक अछि, मुदा पहिने अपन मनक धारणानुकूल जिनगी पेलौं की नहि, ई विचार तँ करि लिअ पड़त किने।”

विचारक प्रवाहमे सुचिता काकी बहि गेली। तँए बहैत-बहैत भँसियाइत बजली- “हँ, से तँ करब अछिए”

पत्नीक मनक बीहकेँ बिहियबैत जगरनाथ काका बजला- “अहाँक हथौटी केकरो किछु लेनो-देन बाँकी अछि?”

अपन स्वनिर्मित जिनगीक शक्ति देखबैत सुचिता काकी

बजली-

“जेकर पति परदेश रहै छै से ने दोसर परिवारसँ सम्बन्ध जोड़ैए मुदा हम तँ सभदिन... ।”

पत्नीक विचार सुनिते जगरनाथ कक्काक मनक संकल्प शक्ति सेहो सक्कत भेलैन, जइसँ मनमे उठलैन जे जहिना अपन जिनगीक भारकेँ अपना कन्हापर कन्हेठ अपन जिनगीक विचारकेँ पालैत-पोसैत अखन धरि एलौं, तहिना... ।

अखन धरिक जिनगीमे जगरनाथ काका अपन पूर्णताकेँ सभ दिन देखैत आबि रहल छैथ आ अखनो ओहिना देखि रहला अछि जेहेन मन बना देखैत आबि रहल छला, तँए मनक तुष्टि विचारकेँ संतुष्ट केनहि छैन।



शब्द संख्या : 1091, तिथि : 22 मार्च 2019

कपटलालक मृत्यु

चारि दिनपर पटनासँ गाम घुमल अबैत रही। बससँ उतैरते गौआँ सभकेँ हियाकऽ देखए लगलौं जे कियो जँ भेटता तँ गामक सभ हाल-चाल बुझि लेब। मुदा से कियो ने भेटला। चाह पीबैक तृष्णा सेहो जगि गेल छल किए तँ छह घन्टा पहिनहि जे पटनामे चाह पीने रही, सएह पीलहा रही। ओना, बस केतेकोठाम रूकल, केते गोरे उतैर-उतैर चाहो पीलैन आ जलखैयो केलैन मुदा अपने ने केतौ चाहे पीलौं आ ने जलखैइये केलौं।

बससँ उतैरते मनमे भेल जे जखन गामे जाएब अछि तखन एते अगुताइये कथीक अछि, परिवारोक सभकेँ बुझले छैन जे पटना गेल छी। गामक गेल नीनक सुतलक कोन ठेकान। बस स्टैण्डमे नइ उतैर स्टेण्डसँ थोड़ेक पाछूए, अपना गामक रस्ता लग उतरलौं। ओइठाम चाह-पानक दोकान नहि, थोड़ेक आगू बढ़ि कऽ अछि। कियो गौंआँ नइ भेटला तखन मन मारि कऽ गामक रस्ता ई सोचि धेलौं जे ऐगला चाहक दोकानपर चाह पीब, पान खा गाम जाएब। मुदा से भेल नहि, मनक विचार–चाह पीब-पान खा, गाम जाएब–तर पड़ि गेल आ गामक हाल-चाल बुझैक जिज्ञासा मनकेँ तेना पकैड़ लेलक जे चाहक दोकान लग चाह मनो ने रहल आ जखन बढ़ि गेलौं तखन चाह मोन पड़ल। एहेन चाह पीआको नहियेँ छी जे घुमि कऽ चाह पीबए जइतौं। तहूमे गामक सीमा परहक पाखैर गाछ लग पहुँच गेल रही।

पारवरिक गाछ लग दुखहरण काका बैसल रहैथ। भरिसक केतौ विदा भेल छैथ, माने गामसँ बाहर। दुखहरण काकाकेँ देखिते मन हलैस गेल जे आब गामक हाल-चाल जरूर बुझब। दुखहरण कक्काक लगमे जा बजलौं-

“गोड़ लगै छी काका। गामक की हाल-चाल अछि?”

ओना, गामो तँ गाम छी, हजारो रंगक लोक जहिना गाममे रहैए तहिना हजारो रंगक वृत्ति सेहो अछिए, जइसँ हजारो रंगक हाल-चाल सेहो हेबे करत मुदा से नहि, गामक हाल-चालक माने होइए जे किछु एहेन घटनाक समाचार जे प्रमुख रूपसँ तजगर अछि। ओना, हाल-चाल बजनिहारो आ सुननिहारोक बीच किछु-ने-किछु अन्तर भइये जाइए, मुदा से होइए अपन-अपन मनक अनुकूल। माने ई जे साइयो रंगक समाचार गाममे रहितो जहिना बजनिहार अपन मनक अनुकूल समाचारकेँ प्रचार-प्रसार बेसी करै छैथ आ मनक प्रतिकूल समाचारकेँ बिसरिये जाइ छैथ वा अनठाइये दइ छैथ तहिना सुननिहारकेँ सेहो होइते छैन। जँ रूचिगर समाचार रहल तँ सुरूचिगर भोजन जकाँ किछु बेसिये चढ़ा देलिऐ आ जँ अरूचिगर रहल तँ किछु कम्मे कऽ देलिऐ वा छोड़िये देलिऐ। खाएर...।

दुखहरण काका कपटलालपर बहुत दिन पहिनेसँ पकपकाएल छला। पकपकाइक कारण छेलैन कपटलालक बेवहार। कपटलालक कपटपन-बेवहार दुखहरण काकाकेँ पसिन नहि छेलैन। पसिनो केना रहितैन। जेहने सोझमतिया विचारक लोक दुखहरण काका तेहने सोझडरिया चालि चलैबला सेहो छथिए। दुखहरण काका बजला-

“बौआ गौरी, गामक की हाल-चाल रहत। एकटा छुतहर घैल फुटल..!”

'एकटा छुतहर घैल फुटल' ई कोन समाचार भेल? अखनो ओहिना मोन अछि जे बैसाख मास मड़ुआ बीआ पटबैकाल जे पानिक झगड़ा होइ छल तँ ओइ झगड़ामे केतेको छुतहर घैल फुटिते छल, मुदा फेर ओहिना-क-ओहिना रहिते आबि रहल अछि। मने-मन तर्क-वितर्क करिते रही, जे दोहरा कऽ दुखहरण काकाकेँ पुछिऐन जे की छुतहर घैल फुटल? अही तर्क-वितर्कमे कनी देरी भऽ गेल। मुदा दुखहरण कक्काक मनमे वर्तनक अदहन जकाँ विचार खौलैत रहैन। जइसँ दोहरा कऽ वएह बजला-

"गौरी, एकटा छुतहर फुटने सोल्होअना तँ नहि मुदा आठअना जरूर गामक उतरी टुटल।"

अलंकारिक शैलीमे दुखहरण काका तावरतोर बाजि रहल छला आ अपने भकचकाएले छेलौं जे गामक केहेन समाचार दुखहरण काका कहि रहला अछि। बीचमे केना कहबो करितिऐन जे 'काका, अहाँक बात हम नइ बुझि रहल छी।' बजैमे लाजो होइते रहए। मने-मन सोचलौं जे एना गामक समाचार नहि बुझि पएब। से नहि तँ अपने पटनाक समाचार बीचमे रखि देब नीक बुझि बजलौं-

"काका, पटनामे ते ऐबेर धमगज्जर भऽ गेल..!"

'धमगज्जर' सुनि दुखहरण कक्काक मनमे जेना बिसवासू उत्कंठा उठलैन तहिना जिज्ञासुक स्वरमे बजला-

"से की गौरी?"

दुखहरण कक्काक जिज्ञासा देखि मनमे भेल जे आब कक्काक अलंकार शास्त्री-मन भरिसक राजनीति शास्त्र दिस बढ़ि गेलैन। भाय, एक्के भाषामे राजनीतो शास्त्र आ अलंकारो शास्त्र किए ने लिखल हुअए मुदा भाषा-शैलीक बीच दूरी बनियेँ जाइए। जखने

शास्त्रक शैलीमे दूरी बनत तरवने मनक विचारक दूरी सेहो बनिते अछि। बजलौं-

"काका, ऐबेर भोटों छी ने!"

जहिना हलैस कऽ कोनो बच्चा कोनो खेलौना वा खाइक वस्तुकेँ लपैक पकड़ए चाहैए तहिना दुखहरण काका लपकैत बजला-

"से की गौरी?"

बजलौं-

"काका, धर्मनिरपेक्ष केकरा कहै छै से शब्द डिक्शनरीसँ निकालि देल गेल।"

अपनाकेँ तीर-कमान जकाँ संयमित करैत दुखहरण काका बजला-

"से केना?"

बजलौं-

"काका, हमहूँ बुझै छेलौं जे धरमौओ पार्टी अछि आ बिनुधरमौओ अछि। मुदा से आँखिक बीझक पानि पटनामे उतैर गेल।"

ओना, जहिना अपने दुखहरण कक्काक मुहेँ गामक समाचार बुझैमे भकचकेलौं तहिना दुखहरण काका सेहो पटनाक समाचारमे भकचकेला। भकचकीए-मे मुँह फुटलैन-

"पटना तँ गंगानदीक महारेपर ने अछि तरवन ओइठाम केना आँखिक बीझक पानि उतरत?"

अपना बुझि पड़ि रहल छल जे दुखहरण काका भकचका जरूर रहला अछि मुदा धारक किनछैरक रस्तासँ चलनिहारकेँ

जहिना सदिकाल पानिक आशा बनल रहै छै तहिना दुखहरण कक्काक मनमे बनल बुझि पड़ल..!

बजलौं-

“काका, लोक बनबैए पार्टी आ लोके तेहेन पट-पटिया अछि जे जइ पार्टीक टिकट भेटल गंगा नहाइत तेही पार्टीक बनि गेलौं।”

दुखहरण काका जेना हमर बात सोल्होअना बुझि गेला तहिना अपन विचारकेँ अलंकार शैलीसँ उतारि समाजशास्त्रक शैलीमे बजला-

“कपटललबा मरि गेल।”

बजलौं-

“कहिया?”

दुखहरण काका-

“आइ चारि दिन भऽ गेल। छौरझप्पियो भऽ गेलइ।”

बजलौं-

“तखन तँ हमरो नीके भेल जे मरैकालक मुइल मुँहक दर्शन नइ भेल।”

हमर विचार सुनि दुखहरण काका मुँह दिस टकटक देखए लगला। तैबीच फेर बजलौं-

“काका, जे मरि गेल तेकरापर सँ आब तामस उतारि लिअ।”

कहलयैन मनसँ तामस उतारि लिअ आ ओ तँ आरो भुभुका आगि जकाँ धधकैत बजला-

“बौआ, अपना सोझमे हंसलालक दू लाख रुपैआ कपटललबा ठकि लेलक।”

पुछलयैन-

“से केना?”

दुखहरण काका बजला-

“गाममे सभकेँ मोन हेतै आ तोरा मोन नइ छह?”

मनपर जोर दिलेऐ तँ अन्हार रातिक तरेगन जकाँ भुकभुक करैत साइयो बात मनमे उठि आएल। कपटलाल एक बेकती नहि, समाजक बीच एक वंश आ वंशवृक्ष जकाँ अछि। बजलौं-

“कनी-मनी मोन पड़ैए काका, मुदा जड़ि नइ मोन पड़ैए।”

दुखहरण काका बजला-

“हंसलाल बेचारा सोझ लोक। से तँ सभ जनिते छी। कपटलाल बजै-भुकैबला लोक रहल, सेहो सभ जनिते-ए। हंसलाल बेटी बिआह करैले एक-एक पाइ जमा केने छल। एकटा लड़का टोहियबैले कपटलालकेँ कहलक। झपासा मारि कपटलाल दुनू लाख रुपैआ एकटा लड़काक दहेजक नामपर टानि लेलक। पछाइत खेत बेच बेचारा हंसलाल अपन बेटीक बिआह केलक।”



शब्द संख्या : 987, तिथि : 25 मार्च 2019

गामक ढहल समाज

बीस बर्खक उमेर पार केलाक पछाइत रीतलाल बुझलक जे हम ढहल समाजक लोक छी। जहिना दुनियाँमे सुरेबगर देशसँ लऽ कऽ ढहल देश तकक बास अछि, जहिना देशमे सुरेबगर राज्यसँ लऽ कऽ ढहल-ढनमनाएल राज्य तकक बास अछि आ जहिना सुरेबगर जिलासँ लऽ कऽ ढहल जिला, ढहल अनुमण्डल, ब्लौक होइत गामोमे गाम अछि आ समाजोमे समाज अछि तहिना गामोमे समाज अछि आ समाजोमे गाम अछिए...।

नव जाड़क मासमे रूइयाक बजार देखि जोलहा जकाँ नवकवरिया रीतलाल माथा-हाथ दए कानल नहि जे 'बाप रे एते रूइया धुनब हमरे बापक दिन छी, असथिरसँ रीतलाल ओइ रूइयाक ढेरीकेँ कबीर बाबा दिस टारि मनकेँ हल्लुक बनौलक। कबीर बाबा जकाँ कियो रूइया धुनैत जिनगी बीता लिअए ई महानता भेबे कएल। ओना, बीच्चेमे छोड़ि जिनगी भरि ढेकार मारनिहारक संख्या बेसी अछिए।

रीतलालक जन्म समाजक ओइ ढहल समाजमे भेल अछि, जे सभ तरहेँ समाजमे ढहल अछि, तँए बोनैया चिड़ैक चिड़ीमार जकाँ पाँखि पकैड़-पकैड़ लड़ैबतो अछि आ ठहाका मारि हँसबो तँ करिते अछि। हजार परिवारक वस्ती मनोरमपुर गाम अछि। परिवारक हिसाबसँ मनोरमपुरमे जातिक संख्या तँ कम अछि मुदा तैयो चालीस-बियालिसटा जातिक वस्ती छीहे। आने गाम जकाँ

गामबाससँ लऽ कऽ बहरबासू धरिक समाजो आ गामो मनोरमपुर छीहे। जहिना रंग-रंगक जाति तहिना रंग-रंगक बिधो-बेवहार आ रीतो-रिवाजक संग देवियो-देवता आ हुनकापर चढ़ैबला फूलो-पात आ अच्छतो-चानन अछिए। कियो सुन्दर वनक सुन्नर चाननक सारीलकेँ रगैड़ चानन करै छैथ तँ कियो अधपकू पीसल पजेबाक चानन मांगमे नइ लगबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। आनठाम-आन गाममे हुअए वा नइ हुअए मुदा मनोरमपुरमे अखनो अछिए। जे बात रीतलाल गामवासी भेने देखियो रहल छल आ भागबो तँ करिते छल।

अँगनाक दुरुखा लग बैसल रीतलाल एक दिस अपन आँगन देखैत आबि रहल छल तँ दोसर दिस गामक अगवास सेहो देखिये रहल अछि। एक्के जातिक तीन घरक वस्तीमे बसैबला एक परिवार रीतलालक अछि, जे सभ तरहेँ सभ दिनसँ सकपंज समाजमे रहबे कएल अछि। समाजसँ ओकरा–माने सकपंज समाजकेँ–की भेटै छै आ ओ समाजकेँ किछु दऽ पबैए वा नहि, ओइ-जोकरक ओ अछि वा नहि, ई दीगर बात भेल। जे मनुक्ख जेत्तै अछि ओ कोनो-ने-कोनो रूपेँ ओत्तै आनन्दित जीवन जीविये रहल अछि। भलेँ ओ बुझैक नजैरिक दूरी रहने नीककेँ अधला वा अधलोकेँ नीक किए ने बुझैत हुअए। ओना, बाल-बिआही प्रथाबला समाजक लोक रीतलाल, मुदा अखन धरि बिआह नइ भेल छेलइ। हँ, ई दीगर प्रश्न अछि जे रीतलालक बिआह भेबे ने केलइ आकि अपने फुरने नइ केलक। ओना, एहेन जिज्ञासा केकरो मनमे रहबे किए करत, जइ समाजमे बाल-बिआहसँ लऽ कऽ अधवेसू उमेरबलाक बिआह होइत आबि रहल अछि, तइ समाजमे 'बिआह' मुद्दे की रहि जाइए। माएकेँ हाक पाड़ि रीतलाल बाजल- "माए, कनी एम्हर अबिहेँ।"

चिपरी पाथैत माए बजली- "बौआ, काजो अधखड़ुआ भऽ

गेल अछि आ हाथोमे तेना गोबर लागल अछि जे धोइमे जेतेक समय लागत तइसँ पहिने काजे उसैर जाएत।”

परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक एक-एक विचार आ एक-एक काजकेँ दौड़ लगा देखै-परखैक परियास रीतलाल मने-मन कए रहल छल। ओना, लोको आ लोकक मनो अपन-अपन होइए, कियो कीर्तन कम करैए आ जयकार बेसी दइए, तँ कियो कीर्तनेमे तेना हेरा जाइए जे जय-जयकारक ठेकाने बिसैर जाइए जे कोन पतियानीक पछाइत केहेन जय-जयकार करब।

गोबरक चिपरी पाथि सुचिता रीतलाल लग आबि बजली-

“बौआ, मन किए खसल देखै छिअह?”

मातृ सोभावक जे गुण अछि, बच्चाक हर अधला रूपकेँ नीक जकाँ निखारि बनाबी जइसँ हँसै-हँसबैक रूपेँ बिला जाइए। हँसमुख फुटा कऽ किए हँसत। जे कनमुँह अछि वा कननमुँह अछि ओकरा ने फुटा-फुटा कऽ हँसबैक खगता अछि, मुदा से केते अछि आ केना बनत, यएह ने मूल भेल...।

जगैत चेतनाक चेतल जकाँ रीतलाल बाजल- “माए, मन खसल कहाँ अछि! हँ, कनी गहींर दिस झूकि गेल अछि।”

अवोध माए सुचिता, तँए रीतलालक भावकेँ नीक जकाँ नहि पकैड़ पेलैन। ओना, मातृत्वक जुआर-मन सुचिताक रहबे करैन। जँ देखल जाए तँ परिवारक सभसँ महत्पूर्ण काज बच्चाक उत्पैतसँ लऽ कऽ पालन-पोषन करब धरिक होइते अछि, मुदा ई तँ एहेन बेवहारिक रूप पकैड़ नेने अछि जे अज्ञानी-सज्ञानी मनुक्खक कोन बात जे पशु-पक्षीसँ लऽ कऽ चुट्टी-पीपरी धरिकेँ ई वोध छइहे। विचारधारी मनुक्खक होइक नाते ई विचार करबे करै छैथ जे

परिवारक सृजन पुरुख-नारीक बीचक जे पुरुषपनक सम्बन्ध अछि तइसँ होइए।

रीतलालक बात बिनु बुझने सुचिता बजली-

"बौआ, अखन हम हाथी सन माए तोरा आगूमे छिऔ, बाप परोछ भऽ गेलखुन तइसँ की, तोरा कोनो चिन्ता हमरा रहैत नइ करक चाही।"

ओना, रीतलाल मने-मन बुझि रहल छल जे माए अपन माइयक भाषामे बाजि रहली अछि, मुदा ओइ सिनेहकेँ रोकबो तँ कठिन अछिए किने। समाजक बीच अपनो आ अपन परिवारक संग अपन समाजोक (समाजक माने जातिक समाज) रूप-रेखा रीतलाल देखि रहल छल तइमे ई देखि रहल छल जे बहुतो गाम एहेन अछि जे अपन-अपन सुधरल रीत-रिबाज बनौने अछि, अपने जैठाम छी ओकरा सुधारि चलब अपन मानवीय कर्तव्य जरूर होइए। मुदा एहेन स्थितिकेँ सुस्थिति केना बनाएब..!

जहिना धिया-पुता पोखैर वा कोनो फलेक गाछपर अन्हा-गाहिंस गोला फेक दइए तहिना रीतलाल सेहो अन्हा-गाहिंस बाजल-

"माए, ऐ गाममे नइ रहब..!"

तीस बर्खक जिनगी बितौल अनुभवी सुचिता, गामक रीत-नीत अंग-अंगमे समा गेल छेलैन। छोट जिनगी तँए पैघ घटनासँ भेँटे किए भेल रहितैन। सुचिता बजली-

"बौआ, जेमे नेपाल कपार संगे जेतौ। एहेन गाम संसारमे केतए अछि जे तेकरा छोड़ि कऽ जेमे। परिवार नइ रहने अहिना लोकक मन छुछुआइए। ऐबेर तोरो बिआह करि देबौ।"

मातृसागरमे दहाइत-भँसियाइत माइक रूप देखि रीतलाल

दिल खोलि कऽ हँसियो रहल छल आ समुद्रमे भँसैत माएकेँ भाषित करैत बजबो कएल-

"माए, जखन गामेक काजमे रौदी लागि गेल अछि तखन परिवारक काज तँ सहजे रौदियाएल रहबे करत। तँए गाममे नीक नइ लगैए।"

ओना, बजैक क्रममे रीतलाल बाजि गेल मुदा मनक मेघमे घुमैड़ रहल छेलइ। आइये नहि, अदौसँ दाव-चापक समाजक बीच अपन समाज रहल अछि, जइसँ जीवन शैली विपरीत दिशामे मुड़ि गेल। तँए जाधैर गाम-समाजक बीच प्रीति-पथ नइ बनत ताधैर सुधारमे गुणात्मक रूप नइ औत। आजुक जे गामक परिदृश्य बनि गेल अछि वा बनैक प्रक्रियामे अछि तैपर नजैर तँ दिअ पड़त...।

सामंजस करैत सुचिता बजली-

"बौआ, अपनेटा परिवार एहेन नइ ने अछि जे रहै-जोकर नइए। अपना सन-सन परिवारसँ ते गामे भरल अछि।"

माइक विचारकेँ सीमांकन करैत रीतलाल बाजल किछु ने, मुदा गामो आ गामक लोकोक चित्र-विचित्रक संग विचित्र-चित्र सेहो मने-मन देखए लगल।



शब्द संख्या : 966, तिथि : 27 मार्च 2019

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान   12 सितम्बर 2018

---

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes